thearyasamaj.org

ओ३म्

परोपकारिणी
दयानन्दसरस्वती

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - ७ | महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र | अप्रैल (प्रथम) २०१५

महर्षि दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

महर्षि के जीवन की झलकियाँ

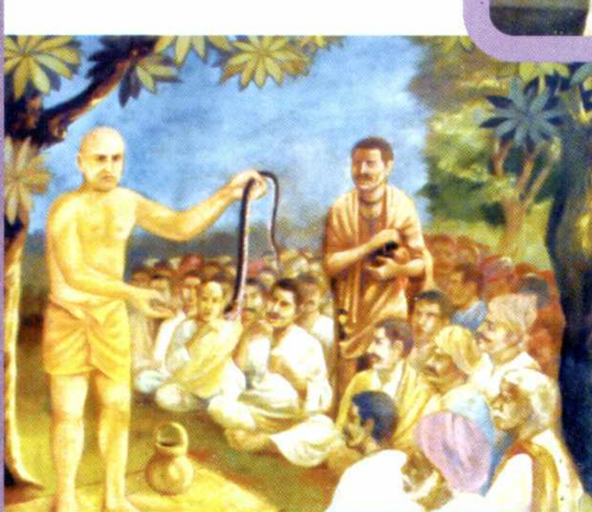
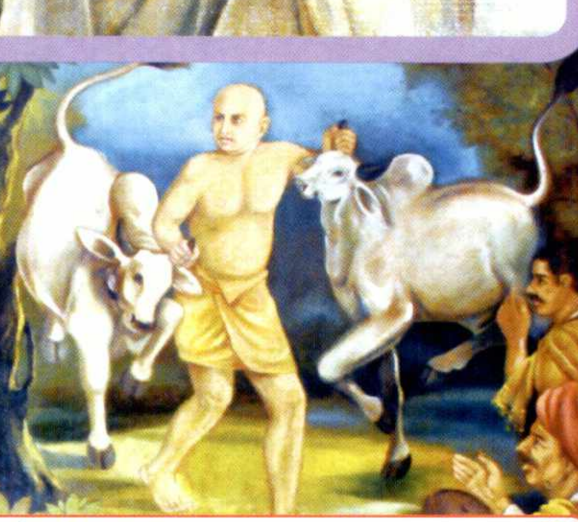

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

वर्ष : ५७ अंक : ६
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: चैत्र कृष्ण, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर-३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

अप्रैल प्रथम २०१५

अनुक्रम

१. संस्कृत भाषा की उन्नति के अवसर	सम्पादकीय	०४
२. दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतेवास्मिता-६	स्वामी विष्वङ्	०७
३. पुस्तक-समीक्षा	देवमुनि	१२
४. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१३
५. कृतिशील आर्य सेनानी-स्वामी.......	डॉ. नयनकुमार	१९
६. अण्डमान प्रचार यात्रा	प्रभाकर आर्य	२३
७. तीर्थराज पुष्कर में महर्षि के प्रचार का प्रभाव		२६
८. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२७
९. ऊमर काव्य	ऊमरदान लालस	३०
१०. स्तुता मया वरदा वेदमाता-७		३६
११. संस्था-समाचार		३७
१२. जिज्ञासा समाधान-८४	आचार्य सोमदेव	४०
१३. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

thearyasamaj.org

संस्कृत भाषा की उन्नति के अवसर

आज भाषा मनुष्य के जीवन में काम चलाऊ साधन के रूप में उपयोग में आती है। भाषा के महत्त्व को आज के वैज्ञानिक और तकनीकी युग में गौण समझ लिया गया है, जबकि मनुष्य का जीवन विचारों पर ही निर्भर करता है। मनुष्य का शरीर जैसे भोजन से बनता है, उसी प्रकार मनुष्य का व्यक्तित्व विचारों से बनता है। विचारों की श्रेष्ठता, गम्भीरता, व्यापकता के लिए भाषा अनिवार्य है। भाषा के बिना चिन्तन, भाषण, लेखन, पठन कुछ भी सम्भव नहीं है।

संस्कृत पुरातन काल से विचार व व्यवहार की भाषा रही है, इसलिये उसके पास ज्ञान-विज्ञान का विशाल भण्डार है। इस ज्ञान-विज्ञान तक पहुँचने के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान अनिवार्य है। आज विद्याध्ययन जीविकोपार्जन के लिए स्वीकार किया गया है। विषय का अध्ययन सामाजिक व्यवहार और आजीविका के लिये आवश्यक है, परन्तु पारिवारिक, सामाजिक और व्यक्तिगत निर्णयों के लिए तो विचार की आवश्यकता है, ये विचार हम को भाषा से ही मिलते हैं। संस्कृत मनुष्य के व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक सम्बन्धों को कैसे परिभाषित करते हैं, उनका आदर्श उदाहरण तैत्तिरीयोंपनिषद् की शिक्षावल्ली में देखने में आता है। वहाँ वेद पढ़ के आजीविका कैसी एवं क्या करनी है यह नहीं बताया, परन्तु व्यक्तिगत उन्नति और पारिवारिक व सामाजिक सम्बन्धों का सफलतापूर्वक निर्वहन करना, शिक्षा का उद्देश्य बताया गया है- जहाँ मातृदेवो भव, पितृदेवो भव आदि विचार व्यक्त किये गये हैं।

सामान्य रूप से इतिहास पढ़ा जाता है, संसार में बहुत सारी भाषायें उत्पन्न हुई और व्यवहार में न आने के कारण उपयोगिता के अभाव में अतीत के गर्त में समा गईं, समाप्त हो गईं। हम संस्कृत को भी अनुपयोगी होने के कारण समाप्त हो गई है, ऐसा मानते हैं, परन्तु यह कथन सत्य नहीं है। संस्कृत उपयोगिता के अभाव में समाप्त नहीं हुई अपितु हमने संकीर्ण स्वार्थ के कारण उसे नष्ट किया है। महाभारत के पश्चात् हमने वेदों को और संस्कृत को केवल जन्मजात ब्राह्मण लोगों की भाषा बनाकर पूरे समाज को शिक्षा और वेदाध्ययन के अधिकार से वञ्चित कर दिया। मध्यकालीन समाज में और साहित्य में हम देखते हैं कि पुरुष पात्र संस्कृत में बात करते हैं, स्त्री या दास प्राकृत भाषा का उपयोग करते हैं। हजारों वर्षों तक वेदाध्ययन के अधिकार से समाज के बहुसंख्यक वर्ग को दूर करके हमने अपनी भाषा व वैचारिक सम्पत्ति का अपने ही हाथों विनाश किया है।

वर्तमान इतिहास अंग्रेज शासकों द्वारा विकृत किया गया और इस्लामी पराधीनता में संस्कृत पठन-पाठन समाप्त कर दिया गया। संस्कृत भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में समाप्त करने में अंग्रेजों के सहयोगी राजा राममोहन राय की महती भूमिका रही है। कोलकाता के विक्टोरिया संग्रहालय में राजा राममोहन राय के चित्र के नीचे लिखा गया- आपने बारह वर्ष तक संघर्ष करके अंग्रेज सरकार को शिक्षा का माध्यम संस्कृत से हटा कर अंग्रेजी करने में सहमत किया। वर्तमान कांग्रेस और सोनिया सरकार तक संस्कृत को समाप्त करने का योजनाबद्ध प्रयास किया गया। विद्यालयों, महाविद्यालयों से संस्कृत पठन-पाठन की व्यवस्था समाप्त की गई। केन्द्रीय और प्रान्तीय शिक्षा परिषदों ने भी अपने पाठ्यक्रम को समाप्त कर दिया। पंजाब सरकार ने सदा ही हिन्दी-संस्कृत को अपने शिक्षा और प्रशासन व्यवस्था से बहिष्कृत करना उचित समझा। ईसाई और मुस्लिम विद्यालयों में इसे समाप्त कर दिया गया। राजनीति द्वारा इसे साम्प्रदायिक और सवर्णों की भाषा बताकर व्यवस्था से निकाल दिया गया। इस प्रकार पिछले पाँच हजार वर्षों से संस्कृत और वेद को नष्ट करने का प्रयास स्वयं द्वारा, देश के शत्रुओं द्वारा निरन्तर किया जा रहा है। जब भाषा आजीविका और प्रतिष्ठा से दूर हो गई तो उसका अध्ययन-अध्यापन समाज में स्वाभाविक रूप से न्यून हो जायेगा।

एक बार किसी संगोष्ठी में एक महाविद्यालय के प्राचार्य ने अपने भाषण में कहा- संस्कृत कठिन है, इसलिए लोग इसे नहीं पढ़ते। उन्होंने अपने बहुत सारे पाश्चात्य विचारों को प्रस्तुत करते हुए अपने उदार सुझाव भी दे दिये। संस्कृत में दो वचन होने चाहिए, सन्धि-समास कम कर देने चाहिए। व्याकरण की जटिलता समाप्त करनी चाहिए। जब वे नीचे आकर बैठे तो मैंने उनसे पूछा- क्या आपने अंग्रेजी इसलिए पढ़ी है कि यह एक सरल भाषा है? तो

thearyasamaj.org

उनके पास कोई उत्तर नहीं था। उसका उत्तर है- भाषा सरलता या कठिनता के कारण नहीं पढ़ी जाती, भाषा पढ़ी जाती है आजीविका प्राप्ति या सम्मान के लिए। जिस भाषा से आजीविका और सम्मान न जुड़ा हो उस भाषा को कौन पढ़ेगा, वह चाहे कितनी सरल या कठिन हो।

आज मोदी सरकार के आने से सोच और व्यवस्था में परिवर्तन की आशा जगी है। प्रधानमन्त्री और भारत सरकार के मानव संसाधन मन्त्रालय ने संस्कृत की उन्नति का बीड़ा उठाया है, तो सरकार के लिए कुछ सुझाव हैं, जिनको ध्यान में रखने से संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार एवं उन्नयन में सहायता मिल सकती है:-

१. विद्यालय के पाठ्यक्रम में पहले संस्कृत थी, परन्तु संस्कृत विरोधी नीति के कारण संस्कृत को हटा दिया गया है। इस भूल को सुधार कर समस्त विद्यालयों के पाठ्यक्रम में कम से कम माध्यमिक (हाई स्कूल) से स्नातक तक संस्कृत भाषा के अध्ययन को अनिवार्य बनाया जाये।

२. संस्कृत के पुराने पाठ्यक्रम परिवर्तित कर उसमें जीवन उपयोगी बातों का समावेश किया जाये।

३. आगे के पाठ्यक्रम में संस्कृत को ऐच्छिक विषय के रूप में स्थान दिया जाये तथा संस्कृत विषय लेने वाले छात्रों के लिए विद्यालयों में अध्यापन की व्यवस्था की जाये।

४. संस्कृत साहित्य में विज्ञान, वाणिज्य आदि जिन विषयों का विस्तार से प्रचुर उल्लेख मिलता है, उस सामग्री का स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में समावेश किया जाये।

मुझे एक बार महाराष्ट्र के एक महाविद्यालय में जाने का अवसर मिला। वहाँ विज्ञान के छात्रों को शुल्ब सूत्रों का अध्ययन करते देखा था। छात्रों ने बतलाया था कि ये सूत्र ग्रन्थ उनके पाठ्यक्रम में लगाये गये हैं और ये बहुत उपयोगी हैं।

५. कला संकाय के महाविद्यालयों में संस्कृत विभाग खोले जाने चाहिए। जहाँ विभाग हैं, उनमें अधिकांश प्राध्यापकों के पद या तो रिक्त हैं या समाप्त कर दिये गये हैं। उनकी यथोचित पूर्त्ति की जानी चाहिए।

६. भारत के सभी विश्वविद्यालयों में संस्कृत विभाग खोले जाने चाहिए। इन विभागों में अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ शोध कार्यों को भी प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

७. संस्कृत भाषा के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान एवं मानविकी के विषयों के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था की जानी चाहिए।

८. संस्कृत भाषा में जिन विषयों का विस्तार से उल्लेख एवं विवेचन हुआ है, जैसे- राजनीति, धर्म, समाज, न्याय, अर्थशास्त्र, आयुर्विज्ञान आदि ऐसे विषयों का अध्ययन-अध्यापन, अनुसन्धान-विवेचन संस्कृत माध्यम से किया जा सकता है।

९. संस्कृत साहित्य की उपेक्षा के कारण ज्ञान-विज्ञान की बहुत सारी सम्पदा नष्ट हो चुकी है, जो शेष है वह विश्व साहित्य में अतुलनीय है। उसके संरक्षण, सम्पादन, प्रकाशन की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। ऐसे कार्य करने वाले संस्थानों और व्यक्तियों को विशेष सहयोग दिये जाने की आवश्यकता है।

१०. संस्कृत के नाम पर रूढ़िगत कर्मकाण्ड के रूप में पौरोहित्य, जीवन में अकर्मण्यता, निराशा और भय उत्पन्न करने वाला फलित ज्योतिष और अवतारवाद, जड़ पूजा जैसे कार्यों को ही संस्कृत मानकर संस्कृत का ह्रास न किया जाये।

इस देश में पठन-पाठन की एक सुदृढ़ परम्परा रही है जो गुरुकुलों, संस्कृत पाठशालाओं, मन्दिरों, मठों तथा पण्डितों के घरों पर चलती रही है, जिसे अंग्रेजों ने योजना पूर्वक नष्ट किया है। यह परम्परा किसी भी सरकारी प्रयास से अधिक शक्तिशाली और व्यापक थी और अब भी हो सकती है। इस परम्परा के संरक्षण और इसको बल देने की आवश्यकता है। गत सरकार में कपिल सिब्बल द्वारा जब शिक्षा के अनिवार्य करने का बिल पास हुआ था, उस समय संस्कृत पाठशालाओं, विद्यालयों के लिए बहुत बड़ा संकट खड़ा हो गया था। जब अध्यापकों की संख्या, विद्यालय का भवन क्षेत्रफल, धन राशि के प्रतिबन्ध लगाये गये, तब संस्कृत विद्यालय के प्रबन्धकों द्वारा मिलकर माँग की गई तो सरकारी आदेश से मदरसों व संस्कृत पाठशालाओं से इस अनिवार्यता को हटा लिया गया था।

११. आज इन गुरुकुलों, संस्कृत पाठशालाओं और अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों को जीवित रखने व उन्नत करने के लिए इन संस्थाओं को संस्कृत आयोग, संस्कृत विश्वविद्यालय या केन्द्रीय संस्कृत शिक्षा बोर्ड के गठन करने की आवश्यकता है।

१२. इन संस्थानों में अध्यापन करने वाले अध्यापकों

thearyasamaj.org

को समान वेतन व सुविधायें दी जानी चाहिये।

१३. संस्कृत पाठशाला, गुरुकुल आदि के लिये व्यापक और समस्त वेद एवं संस्कृत साहित्य के विषयों को अपने में समेटने वाला पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिए तथा परीक्षा उपाधि की व्यवस्था सरकार द्वारा की जानी चाहिए।

१४. ऐसा करने से पठन-पाठन की परम्परा और संस्कृत साहित्य सम्पदा की रक्षा की जा सकती है। इन पाठशालाओं और गुरुकुलों के पाठ्यक्रम में संस्कृत माध्यम से नवीन विषयों का समावेश भी किया जाना चाहिए, जिससे वहाँ के पढ़े छात्रों का ज्ञान अन्य विद्यालयों में पढ़े छात्रों से किसी भी प्रकार कम न हो।

१५. भारत सरकार का संस्थान है सिडको। यदि इसके माध्यम से संस्कृत के विद्वानों को प्रकल्प या योजना का प्रारूप बनाकर दिया जाये तो संस्कृत का संगणक (कम्प्यूटर) प्रयोग करना आने से संस्कृत आजीविका और व्यवहार की भाषा बनाने में सहायता मिल सकती है।

सरकार ने संस्कृत के विकास के लिए सुझाव देने के लिए आयोग बनाया है। संस्कृत प्रेमियों को चाहिए कि वे अपने सुझाव आयोग को भेजे, आपकी सुविधा के लिए ये कुछ सुझाव हैं इनको अधिक विस्तृत और उपयोगी बनाया जा सकता है। इस अवसर का संस्कृत प्रेमियों को उपयोग करना चाहिए।

आयोग का पता:-
डॉ. सत्यव्रत, द्वितीय संस्कृत आयोग,
राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नामित, ५६-५७,
इन्स्टीट्यूशनल एरिया, पंखा रोड, जनकपुरी,
नई दिल्ली-११००५८

आज के लिए यह उक्ति सटीक बैठती है-

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति,
न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।।

- धर्मवीर

कविता

- सत्यदेव प्रसाद आर्य मरुत,

सारे संसार का उपकार करना
अपना भी उद्धार करना है।
शारीरिक-आत्मिक और सामाजिक
उन्नति करना ही परोपकार करना है।।
सारी सुख-सुविधा और विद्या हमारा कल्याण करती है,
छोड़ देना उन्हें तो अपने आप मरना है।।
हवा हमने सुवासित की,घरों में यज्ञ करने पर,
सुगन्धित घृत जड़ी-बूटी जलाई अग्नि जलने पर।
ऋचायें वेद की गाई हृदय में भावना भर ली।
जगत कल्याण करने की व्यवस्था सार्थक कर ली।
श्रुति की निःसृत वाणी कल्पतरु पुण्य झरना है।।
ज्यों सूरज तप्त करके जल सुखाता और उड़ाता है,
प्रकाशित कर धरा को प्रदूषण को भगाता है।
स्वयं छुप कर हमें विश्राम करने की दे छुट्टी,
अन्न फल फूल दे हम को, गरम कर देता है मुट्ठी।
हमें भी अपने जीवन में सूरज बन उभरना है।।
जगत के सारे पौधों को जो जीवन दे के सरसाता,
पनपता जल उसी में जा, करे पोषण बदल जाता।
मिर्च का स्वाद तीता आम है मीठा और चरपरी इमली,
चतुर्दिक रूप अपना तज कड़क कर बन रही बिजली।
डुबा डुबकी लगा कर जो, उबर कर तैर तरना है।।

- आर्य समाज, नेमदार गंज, नवादा- बिहार।

विद्वानों को अपनी शिक्षा से कुमार ब्रह्मचारी और कुमारी ब्रह्मचारिणियों को परमेश्वर से लेके पृथिवी पर्य्यन्त पदार्थों का बोध कराना चाहिये कि जिससे वे मूर्खपनरूपी बन्धन को छोड़ के सदा सुखी हों।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.८

इस संसार में माता-पिता, बन्धुवर्ग और मित्रवर्गों को चाहिये कि अपने सन्तान आदि को अच्छी शिक्षा देकर ब्रह्मचर्य करावें जिससे वे गुणवान् हों।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.९

thearyasamaj.org

दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतेवास्मिता-६

- स्वामी विष्वङ्

महर्षि पतञ्जलि ने अविद्या के पाँच विभाग (अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्च क्लेशाः) बताये हैं। उन पाँचों में से पहले विभाग की परिभाषा पिछले पाँचवें सूत्र में की है। प्रस्तुत सूत्र में अविद्या के दूसरे विभाग-अस्मिता को लेकर चर्चा की जा रही है। अस्मिता के स्वरूप को बताते हुए महर्षि कहते हैं- दृग्शक्ति और दर्शनशक्ति की एकरूपता (दोनों को अलग-अलग न मानकर उनके एकत्व) को अस्मिता नामक क्लेश कहते हैं। सूत्र में दृग्शक्ति जीवात्मा के लिए आया है और दर्शनशक्ति मन के लिए आया है। आत्मा और मन ये दोनों अलग-अलग पदार्थ हैं, परन्तु मनुष्य को ये अलग-अलग नहीं प्रतीत होते हैं, बल्कि एक पदार्थ रूप में प्रतीत होते हैं। दो तत्त्वों को एक तत्त्व मानना और वह भी आत्मा व मन को, यह ही अस्मिता कहलाती है। इस अस्मिता क्लेश के कारण मनुष्य स्वयं आत्मा को और साधन मन को अलग नहीं देख पाता है। जब तक मनुष्य के जीवन में यह स्थिति बनी रहती है, तब तक आत्मा अपने स्वरूप की पहचान नहीं पाता है, इसलिए महर्षि ने अस्मिता की परिभाषा करके स्पष्ट किया है कि अस्मिता को समझकर हम उस क्लेश को दूर कर सके। प्रस्तुत सूत्र की व्याख्या करके महर्षि वेदव्यास ने उसे योगसाधक के लिए और सरल कर दिया है, जिससे आत्मा व मन को पृथक्-पृथक् समझा जा सके।

महर्षि वेदव्यास प्रस्तुत सूत्र की व्याख्या करते हुए कहते हैं- **'पुरुषो दृक्शक्तिः'** अर्थात् जीवात्मा देखने के स्वभाव वाला है। देखना- अनुभव करना- जानना आत्मा का स्वभाव है। इसी स्वभाव को **'दृक्शक्तिः'** शब्द से स्पष्ट किया है। **'बुद्धिर्दर्शनशक्तिः'** अर्थात् बुद्धि=मन दिखाने के स्वभाव वाला है। दिखाना-अनुभव कराना-जनाना मन का स्वभाव है। मन के इसी स्वभाव को **'दर्शनशक्तिः'** शब्द से स्पष्ट किया है। यहाँ बुद्धि शब्द का अर्थ ज्ञान नहीं है और न ही महत्तत्त्व रूपी बुद्धि है। बुद्धि शब्द के बहुत सारे अर्थ हो सकते हैं। जैसे- बुद्धि का अर्थ ज्ञान भी होता है, महत्तत्त्व भी होता है, मन भी होता है। यहाँ पर प्रसंग मन का है, इसलिए बुद्धि शब्द से मन का ही अर्थ ग्रहण करना चाहिए। मन को बुद्धि इसलिए कहा जाता है-

बुध्यते अनेन इति बुद्धिः।

अर्थात् जिसके माध्यम से जाना जाता है वह जानकारी का माध्यम मन है। यहाँ साधन अर्थ में बुद्धि शब्द का प्रयोग है, इसलिए महर्षि वेदव्यास बुद्धि का अर्थ दर्शनशक्ति करते हैं। महर्षि आगे कहते हैं-

इत्येतयोरेकस्वरूपापत्तिरिवास्मिता क्लेश उच्यते।

अर्थात् इन दोनों (दृक्शक्ति-आत्मा दर्शनशक्ति-मन) के एकरूप हो जाने जैसा लगता है। यद्यपि आत्मा व मन एकरूप (एक तत्त्व) न होते हुए भी एकरूप (एकतत्त्व सा) जैसे प्रतीत होते हैं। आत्मा और मन अलग-अलग तत्त्व होने पर भी इनको एक तत्त्व मानना ही अस्मिता नामक क्लेश कहलाता है। यह अस्मिता नामक क्लेश अविद्या का दूसरा विभाग है।

आत्मा और मन की एकरूपता को समझाते हुए महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

भोक्तृभोग्यशक्त्योरत्यन्तविभक्तयोरत्यन्तासङ्कीर्णयोर-विभागप्राप्ताविव सत्यां भोगः कल्पते।

अर्थात् आत्मा को भोक्तृशक्ति और मन को भोग्यशक्ति शब्दों से स्पष्ट किया है। आत्मा भोक्ता है अर्थात् भोग करने वाला है। भोग करने वाले को ज्ञाता भी कहते हैं। ज्ञाता चेतन होता है, चेतना आत्मा का स्वभाव है। जानने का स्वभाव जिसमें होता है, वह ज्ञाता कहलाता है और जो ज्ञाता है वही चेतन है। ज्ञाता जिसका भोग करता है वह भोग्य कहलाता है अर्थात् भोगने योग्य पदार्थ। भोगने योग्य पदार्थ दो प्रकार के होते हैं- एक केवल भोग्य पदार्थ जैसे- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द। दूसरे प्रकार के भोग्य पदार्थ जिनका भोग भी किया जाता है और जो भोग के साथ-साथ अन्य भोग्य पदार्थों के साधन भी बनते हैं। जैसे- इन्द्रियाँ, जिस प्रकार से इन्द्रियाँ रूप, रस आदि भोग्य पदार्थों के साधन बनती हैं और इन्द्रियाँ स्वयं भोगने योग्य पदार्थ भी हैं। जब साक्षात् इन्द्रियों को जानना है, तो इन्द्रियाँ स्वयं भोगने योग्य पदार्थ भी हैं। जब साक्षात् इन्द्रियों को जानना है, तो इन्द्रियाँ भोग्य बन जाती हैं और मन भोगाने का साधन बन जाता है। ठीक इसी प्रकार मन भी भोग्य है। जब मन को जानना हो तब मन भी भोग्य पदार्थ

thearyasamaj.org

बन जाता है, इसलिए महर्षि वेदव्यास ने मन को भोग्यशक्ति शब्द से स्पष्ट किया है। महर्षि कहते हैं- भोक्तृशक्ति आत्मा और भोग्यशक्ति मन दोनों अत्यन्त **विभक्त** हैं- अलग-अलग हैं। एक चेतन के रूप में है और दूसरा जड़ के रूप में। दोनों में भिन्नता है, दोनों विपरीत हैं। इतना ही नहीं दोनों भले ही एक साथ रहते हों, परन्तु दोनों **असंकीर्ण** हैं अर्थात् दोनों घुल-मिल नहीं सकते। जिस प्रकार दूध और पानी को मिलाकर एक जैसा किया जाता है उसी प्रकार आत्मा और मन को मिलाकर एक जैसा नहीं किया जा सकता, इसलिए दोनों एक साथ रहते हुए भी अलग-अलग रहते हैं। ऐसे अलग-अलग रहने वाले आत्मा और मन को घुले-मिले हुए से अनुभव करना, दो अलग तत्त्वों को अभिन्न एक तत्त्व अनुभव करना, मानो दो नहीं एक ही तत्त्व है, ऐसा प्रतीत होना '**भोग**' कहलाता है। भोग का अनुभव करना अस्मिता नामक क्लेश के कारण होता है।

भोग योग में अत्यन्त बाधक है। जब तक भोग बना रहता है, तब तक योग की सिद्धि नहीं होती है। भोग अस्मिता का परिणाम है। भोग मनुष्य को बन्धन में ढकेलता है। भोग शब्द का क्या अर्थ है? भोग किसे कहते हैं? इसका समाधान महर्षि वात्स्यायन ने न्यायदर्शन भाष्य में संक्षेप में किया है- '**भोगो बुद्धिः**' (न्याय. १.१.९) अर्थात् ज्ञान को भोग कहते हैं। यहाँ बुद्धि का अभिप्राय ज्ञान है। यद्यपि बुद्धि का अर्थ ज्ञान है, परन्तु यह ज्ञान-मिथ्या-ज्ञान है तत्त्व-ज्ञान नहीं है, क्योंकि यह भोगरूपी बुद्धि अस्मिता नामक क्लेश के कारण उत्पन्न होती है। अस्मिता नामक क्लेश की उपस्थिति में जो भी ज्ञान उत्पन्न होता है, वह ज्ञान मिथ्या-ज्ञान ही होता है। भोग का सारांश है मिथ्या-बुद्धि। मिथ्या-बुद्धि को हटाकर यथार्थ-बुद्धि को उत्पन्न करना मनुष्य का प्रयोजन होना चाहिए, इसलिए महर्षि वेदव्यास कहते हैं-

स्वरूपप्रतिलम्भे तु तयोः
कैवल्यमेव भवति कुतो भोग इति।

अर्थात् उन दोनों (आत्मा व मन) के स्वरूप का- एक का चेतन के रूप में दूसरे का जड़ के रूप में यथार्थ ज्ञान हो जाये कि दोनों अलग-अलग हैं- भिन्न-भिन्न हैं- न घुलने-मिलने वाले हैं- दोनों के स्वभाव सर्वथा पृथक्-पृथक् हैं, इसप्रकार विवेक हो जाये अर्थात् सत्त्व= मन पुरुष=आत्मा का पृथक्त्व का ज्ञान (**सत्त्वपुरुषा-न्यताख्याति**) हो जाने पर तो मनुष्य को कैवल्य की प्राप्ति हो जाती है।

यहाँ पर भोग के अभाव में कैवल्य की स्थिति बतायी जा रही है। जब आत्मा भोग नहीं करता है, तब योग करता है। योग की स्थिति में ही आत्मा केवल होता है। केवल होने का अभिप्राय है आत्मा स्वयं को अकेला अनुभव करता है। मन को स्वयं से अलग अनुभव करता है और स्वयं को चेतन, नित्य, शुद्ध और बन्धनों से मुक्त अनुभव करता है। यह ही केवलपना है, इसे कैवल्य भी कहते हैं। इस स्थिति को महर्षि पतञ्जलि ने स्वयं कैवल्यपाद में सूत्र रूप में स्पष्ट किया है-

......कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति
(योग. ४.३४)

अर्थात् जीवात्मा अपने निजस्वरूप (चेतन स्वरूप) में रहता है, अपने स्वरूप को यथार्थ रूप में अनुभव करता है। इस चेतन अनुभव को वह भी केवल चेतन अनुभव को कैवल्य कहा गया है, क्योंकि इसमें मन जुड़ा हुआ नहीं है, इसलिए यह कैवल्य है। यदि आत्मा और मन एकरूप होकर अनुभव करते होते तो भोग कहलाता है। इसी कारण महर्षि वेदव्यास ने कहा है- '**कुतो भोग इति**' अर्थात् फिर भोग कैसे होगा? जब आत्मा को अपने केवलपन का अनुभव हो रहा हो तब भोग का अनुभव नहीं हो सकता। इसलिए भोग का सर्वथा अभाव बताया गया है।

महर्षि वेदव्यास ने किसी अन्य ऋषि का उद्धरण देते हुए कहा है-

तथा चोक्तम्- बुद्धितः परं
पुरुषमाकारशीलविद्यादिभिर्विभक्तमपश्यन्
कुर्यात्तत्रात्मबुद्धिं मोहेनेति।

अर्थात् वैसे ही (किसी ऋषि ने) कहा है कि बुद्धि=मन से सर्वथा अलग पुरुष=जीवात्मा को केवल चेतन स्वरूप वाले असंग स्वभाव (किसी भी जड़ के साथ न घुल-मिलने) वाले ज्ञान, इच्छा आदि गुणों वाले जीवात्मा (जो मन से बिल्कुल भिन्न) को न देखता हुआ= न जानता हुआ सांसारिक मानव मोह (अविद्या) के कारण उस बुद्धि रूपी मन को आत्मा समझ बैठता है अर्थात् आत्मा और मन को अलग-अलग नहीं मानकर मन को ही आत्मा समझता है। ऐसी मूर्खता अविद्या के कारण मनुष्य करता रहता है। इस मूर्खता से बाहर निकलना केवल योगाभ्यास से ही सम्भव हो पायेगा, अन्यथा और कोई मार्ग नहीं है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

thearyasamaj.org

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १४ से २१ जून, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

thearyasamaj.org

में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर **'मन्त्री परोपकारिणी सभा'** अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्त्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

thearyasamaj.org

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में

प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर

का भव्य आयोजन

दिनांक : १७ मई २०१५ रविवार से २४ मई २०१५ रविवार तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

सम्पर्क सूत्र : ०९००१४३४४८४

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

मनुष्यों को चाहिये कि अपने पुरुषार्थ से सुवर्ण आदि धन को इकट्ठा कर घोड़े आदि उत्तम पशुओं को रक्खें क्योंकि जब तक इस सामग्री को नहीं रखते तब तक गृहाश्रमरूपी यज्ञ परिपूर्ण नहीं कर सकते इसलिये सदा पुरुषार्थ से गृहाश्रम की उन्नति करते रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६३

जो नित्य पदार्थों में नित्य और स्थिरों में भी स्थिर परमेश्वर है, उस समस्त जगत् के उत्पन्न करने वाले परमेश्वर की प्राप्ति और योगाभ्यास के अनुष्ठान से ही ठीक-ठीक ज्ञान हो सकता है, अन्यथा नहीं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.२५

छूट गये हैं पाप जिन के वे विद्वान् लोग अपनी विद्या के प्रकाश में जैसे ईश्वर के गुणों को देख के सत्य धर्माचारयुक्त होते हैं वैसे हम लोगों को भी होना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.५

thearyasamaj.org

पुस्तक - समीक्षा

पुस्तक का नाम - वेद के पाठक सावधान!
(वेद तथा वेद सम्बन्धी आक्षेपों का समाधान)
लेखक - शिव नारायणसिंह गौतम
प्रकाशक - विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द,
४४०८, नई सड़क, दिल्ली-११०००६
मूल्य - १५०/- रु. **पृष्ठ संख्या** - २५६

आज जनक्रान्ति का युग है। विद्वान्, श्रोता जनमानस के साथ प्रचार-प्रसार में जो योगदान दे रहे हैं वे कितनी सार्थक है। वेदानुकूल बाते करेंगे किन्तु वास्तविकता से दूर। वेद का पठन-पाठन करते नहीं बात वेद की करेंगे। वेद में मूर्तिपूजा है, वेद में मांस भक्षण है, यज्ञ में पशुबली का विधान है। अर्थ का अनर्थ करने में लोग पीछे नहीं। भोलीभाली जनता भी उनके जाल में फंस जाती है, उनका चिन्तन वहीं तक सीमित हो जाता है। ब्रह्म वाक्यं जनार्दनम्- को चरितार्थ करने वाले हैं। एक शब्द के कितने पर्याय या अर्थ हैं यह चिन्तन का विषय ही नहीं। अलग-अलग आचार्यों ने वेद भाष्य वीभत्सता एवं अश्लीलता पूर्ण किया है। ऋषि सम्बन्धि भ्रमपूर्ण मान्यता, नरबलि प्रथा, अगस्त्य एवं लोपामुद्रा का आख्यान किस बात का प्रतीक है?

हमें वेदों की ओर लौटना है। सही अर्थ को समझना है। देश में वेदों के प्रति आस्था बढ़े, जन जागृति जगे। अन्धकार से दूर हो तथा वेदों के प्रति जो आक्षेप है, उनका सही अर्थ समझे। पाश्चात्य विद्वानों के संस्कृत एवं वैदिक साहित्य के प्रति अल्पज्ञान का उदाहरण पुस्तक में दिया गया है। आर्य शब्द का यथार्थ स्वरूप, वेद तथा आधुनिक भारतीय के सही तथ्यों को उजागर किया है। वेद में लिङ्ग पूजा का मिथ्या आरोपण किया गया है।

सायण भाष्य एवं सायणाचार्य के पौराणिक भाष्य शैली तथा उसके भाष्य के आधार पर पाश्चात्यों के भाष्य तथा भाषानुवाद एवं संस्कृत ज्ञान की अल्पज्ञता के कारण मैक्समूलर को १० वर्ष बाद अपने वेदभाष्य पर पुनर्विचार हेतु विवश होना पड़ा। लेखक ने महर्षि दयानन्द, उनके वेदभाष्य की विशिष्टता, काशी शास्त्रार्थ द्वारा पुनर्जागरण तथा पुनरोद्धार का आरम्भ बताया। लेखक का अथक प्रयास है, टीस है, इस कारण वेद के पाठक सावधान! कहा तथा वेद तथा वेद सम्बन्धी आक्षेपों का तर्कपूर्ण दृष्टि से समाधान भी किया है। आद्योपांत पाठ से आंखे खुल जाती हैं। वेद गडरियों की पुस्तक अथवा आदिकाल अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति के साथ निकटता एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण है। ऐसे में महर्षि दयानन्द का भाष्य सर्वोपरि है। वैदिक यज्ञ पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक का सम्पूर्ण कलेवर महत्त्वपूर्ण है।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

thearyasamaj.org

कुछ तड़प-कुछ झड़प
काशी शास्त्रार्थ का वृत्तान्त

- राजेन्द्र जिज्ञासु

[**विशेष टिप्पणी**:- सम्वत् १९२६ (सन् १८६९) का महर्षि का काशी शास्त्रार्थ नवयुग की आहट था। श्रद्धेय लक्ष्मण जी लिखित ऋषि जीवन का अनुवाद तथा सम्पादन करते हुए विनीत तत्कालीन कई पत्रों तथा पुराने स्रोतों के प्रमाणों से युक्त अनेक टिप्पणियाँ देकर गवेषकों, लेखकों व विद्वानों के लाभार्थ पर्याप्त नई जानकारी दी है। ऋषि के विरोधियों तथा अन्य मतावलम्बियों के शास्त्रार्थ विषयक विचार भी ग्रन्थ में उद्धृत किये गये हैं।

उस ग्रन्थ पर कार्य करते समय भरसक प्रयत्न व भागदौड़ करने पर भी तब हमें 'आर्य दर्पण' मासिक का वह अंक न मिल सका जिसमें यह शास्त्रार्थ छपा था। मेरठ के ऋषि भक्त धर्मपाल के हाथ आर्य दर्पण के कई महत्त्वपूर्ण अंक लगे परन्तु फरवरी सन् १८८० का वह अंक उन्हें न मिला जिसमें यह शास्त्रार्थ छपा था। सौभाग्य से परोपकारिणी सभा के पुरुषार्थी आर्यवीर श्री राहुल जी आर्य, अकोला ने यह ऐतिहासिक अंक भी खोजकर हमें तृप्त कर दिया है। 'आर्य दर्पण' में प्रकाशित 'शास्त्रार्थ काशी' आगे दिया जाता है। लक्ष्मण जी के ग्रन्थ के साथ मिलान करके पढ़ने से पाठकों को विशेष लाभ होगा। मूल अंक अब सभा की सम्पत्ति है। लक्ष्मण जी के ग्रन्थ में अत्यधिक पूरक सामग्री दी गई है। पाठक उसे भी अवश्य देखें।]

शास्त्रार्थ काशी जो सम्वत् १९२६ में स्वामी दयानन्द सरस्वती और काशी के पण्डितों के बीच आनन्द बाग में हुआ था।

एक दयानन्द सरस्वती नाम संन्यासी दिगम्बर गंगा के तीर विचरते रहते हैं जो सत् पुरुष और सत्य शास्त्रों के वेत्ता हैं। उन्होंने सम्पूर्ण ऋग्वेद आदि का विचार किया है सो ऐसा सत्य शास्त्रों को देख निश्चय करके कहते हैं कि पाषाणादि मूर्ति पूजन, शैवशाक्त, गणपत और वैष्णव आदि सम्प्रदायों और रुद्राक्ष, तुलसी माला, त्रिपुंड्रादि धारण का विधान कहीं भी वेदों में नहीं है। इससे ये सब मिथ्या ही हैं। कदापि इनका आचरण न करना चाहिये क्योंकि वेद विरुद्ध और वेदों में अप्रसिद्ध के आचरण से बड़ा पाप होता है। ऐसी मर्यादा वेदों में लिखी है।[१]

इस हेतु से उक्त स्वामी जी हरिद्वार से लेकर सर्वत्र इसका खण्ड़न करते हुए काशी में आकर दुर्गाकुण्ड के समीप आनन्द बाग में स्थित हुए। उनके आने की धूम मची। बहुत से पण्डितों ने वेदों के पुस्तकों में विचार करना आरम्भ किया परन्तु पाषाणादि मूर्त्तिपूजा का विधान कहीं भी किसी को न मिला। बहुधा करके इसके पूजन में आग्रह बहुतों को है। इससे काशीराज महाराजा ने बहुत से पण्डितों को बुलाकर पूछा कि इस विषय में क्या करना चाहिये। तब सब ने ऐसा निश्चय करके कहा कि किसी प्रकार से दयानन्द स्वामी के साथ शास्त्रार्थ करके बहुकाल से प्रवृत्त आचार को जैसे स्थापना हो सके करना चाहिये।

निदान कार्तिक शुद्धि १२ सं. १९२६ मंगलवार को महाराजा काशी नरेश बहुत से पण्डितों को साथ लेकर जब स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने के हेतु आए तब दयानन्द स्वामी जी ने महाराजा से पूछा कि आप वेदों की पुस्तक ले आए हैं वा नहीं?

तब महाराजा ने कहा कि वेद सम्पूर्ण पण्डितों को कण्ठस्थ हैं। पुस्तकों का क्या प्रयोजन है?[२] तब दयानन्द सरस्वती ने कहा कि पुस्तकों के बिना पूर्वापर प्रकरण का विचार ठीक-ठीक नहीं हो सकता। भला पुस्तक तो नहीं लाए? तो नहीं सही परन्तु किस विषय पर विचार होगा?

तब पण्डितों ने कहा कि तुम मूर्तिपूजा का खण्डन करते हो, हम लोग उसका मण्डन करेंगे। पुनः स्वामी जी ने कहा कि जो कोई आप लोगों में मुख्य हो वही एक पण्डित मुझसे संवाद करे।[३] पण्डित रघुनाथ प्रसाद कोतवाल ने भी यह नियम किया कि स्वामी जी से एक-एक पण्डित विचार करे।

सबसे पहिले ताराचरण नैयायिक स्वामी जी से विचार के हेतु सन्मुख प्रवृत्त हुए।

स्वामी जी ने उनसे पूछा कि आप वेदों का प्रमाण मानते हैं वा नहीं?

उन्होंने उत्तर दिया कि जो वर्णाश्रम में स्थित हैं उन सब को वेदों का प्रमाण ही है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि कहीं वेदों में पाषाण आदि मूर्तियों के पूजन का प्रमाण है वा नहीं, यदि है तो

thearyasamaj.org

दिखाइये और जो न हो तो कहिये कि नहीं है।

तब पं. ताराचरण ने कहा कि वेदों में प्रमाण है वा नहीं परन्तु जो एक वेदों का ही प्रमाण मानता है औरों का नहीं उसके प्रति क्या कहना चाहिये?[४]

स्वामी जी ने कहा कि औरों का विचार पीछे होगा। वेदों का विचार मुख्य है। इस निमित्त इसका विचार पहिले ही करना चाहिये क्योंकि वेदोक्त ही कर्म मुख्य है और मनुस्मृति आदि भी वेद मूलक हैं इससे इनका भी प्रमाण है क्योंकि जो वेद विरुद्ध और वेदों में अप्रसिद्ध है उनका प्रमाण नहीं होता।

पं. ताराचरण ने कहा कि मनुस्मृति का वेदों में कहाँ मूल है? स्वामी जी ने कहा कि जो-जो मनु जी ने कहा है सो-सो औषधियों का भी औषध है ऐसा सामवेद के ब्राह्मण में कहा है।

विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि रचना की अनुत्पत्ति होने से अनुमान प्रतिपाद्य प्रधान जगत् का कारण नहीं। व्यास जी के इस सूत्र का वेदों में क्या मूल है।[५]

इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह प्रकरण से भिन्न बात है। इस पर विचार करना न चाहिये।[६]

फिर विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि यदि तुम जानते हो तो अवश्य कहो। इस पर स्वामी जी ने यह समझकर कि प्रकरणान्तर में वार्त्ता जा रहेगी इससे न कहा और कह दिया कि जो कदाचित् किसी को कण्ठ न हो तो पुस्तक देखकर कहा जा सकता है।

तब विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा जो कण्ठस्थ नहीं है तो काशी नगर में शास्त्रार्थ करने को क्यों उद्यत हुए।

इस पर स्वामी जी ने कहा क्या आपको सब कण्ठाग्र है?

विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि हाँ हमको सब कण्ठस्थ है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि कहिये धर्म का क्या स्वरूप है?

विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि जो वेद प्रतिपाद्य फल सहित अर्थ है वहीं धर्म कहलाता है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह आपकी संस्कृत है। इसका क्या प्रमाण है। श्रुति वा स्मृति से कहिये।[७]

विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा जो चोदना लक्षण अर्थ है सो धर्म कहलाता है। यह जैमिनि का सूत्र है।

स्वामी जी ने कहा कि यह तो सूत्र है, यहाँ श्रुति वा स्मृति को कण्ठ से क्यों नहीं कहते? और चोदना नाम प्रेरणा का है वहाँ भी श्रुति वा स्मृति कहना चाहिये जहाँ प्रेरणा होती है।

जब इसमें विशुद्धानन्द स्वामी ने कुछ भी न कहा तब स्वामी जी ने कहा कि अच्छा आपने जो धर्म का स्वरूप तो न कहा परन्तु धर्म के कितने लक्षण हैं कहिये।

विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि धर्म का एक ही लक्षण है।

स्वामी जी ने कहा कि मनुस्मृति में तो धर्म के दस लक्षण हैं- धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध- फिर कैसे कहते हो कि एक ही लक्षण है।[८]

तब बाल शास्त्री ने कहा कि हमने सब धर्मशास्त्र देखा है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि आप अधर्म का लक्षण कहिये तब बाल शास्त्री जी ने कुछ उत्तर न दिया फिर बहुत से पण्डितों ने इकट्ठे हल्ला करके पूछा कि वेद में प्रतिमा शब्द है वा नहीं? इस पर स्वामी जी ने कहा कि प्रतिमा शब्द तो है। उन लोगों ने कहा कि कहाँ पर है? स्वामी जी ने कहा कि सामवेद के ब्राह्मण में है।

फिर उन लोगों ने कहा कि वह कौनसा वचन है। इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह है देवता के स्थान कंपायमान होते और प्रतिमा हंसती है इत्यादि।[९]

फिर उन लोगों ने कहा कि प्रतिमा शब्द तो वेदों में भी है फिर आप कैसे खण्डन करते हैं।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि प्रतिमा शब्द से पाषाणादि मूर्त्ति पूजनादि का प्रमाण नहीं हो सकता है[१०]। इसलिए प्रतिमा शब्द का अर्थ करना चाहिये कि इसका क्या अर्थ है।

तब उन लोगों ने कहा कि जिस प्रकरण में यह मन्त्र है उस प्रकरण का क्या अर्थ है?

इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह अर्थ है अथ अद्भुत शान्ति की व्याख्या करते हैं ऐसा प्रारम्भ करके फिर रक्षा करने के लिए इन्द्र इत्यादि सब मूल मन्त्र वहीं सामवेद के ब्राह्मण में लिखे हैं। इनमें से प्रति मन्त्र करके तीन-तीन हजार आहुति करनी चाहिये इसके अनन्तर व्याहृति करके पाँच-पाँच आहुति करनी चाहिये । ऐसा करके सामगान भी करना लिखा है। इस क्रम करके अद्भुत शान्ति का विधान किया है। जिस मन्त्र में प्रतिमा शब्द है सो मन्त्र मृत्यु लोक विषयक नहीं है किन्तु ब्रह्म लोक विषयक है सो ऐसा है कि जब विघ्नकर्त्ता देवता पूर्व दिशा में वर्त्तमान होवे

thearyasamaj.org

इत्यादि मन्त्रों से अद्‌भुत दर्शन की शान्ति कहकर फिर दक्षिण दिशा पश्चिम दिशा और उत्तर दिशा इसके अनन्तर भूमि की शान्ति कहकर मृत्युलोक का प्रकरण समाप्त कर अन्तरिक्ष की शान्ति कहके इसके अनन्तर स्वर्ग लोक फिर परम स्वर्ग अर्थात् ब्रह्म लोक की शान्ति कही है। इस पर सब चुप रहे।

फिर बालशास्त्री ने कहा कि जिस-जिस दिशा में जो-जो देवता है उस-उस की शान्ति करने से अद्‌भुत देखने वालों के विघ्नों की शान्ति होती है। इस पर स्वामी जी ने कहा कि यह तो सत्य है परन्तु इस प्रकरण में विघ्न दिखाने वाला कौन है? तब बाल शास्त्री ने कहा कि इन्द्रियाँ देखने वाली हैं। इस पर स्वामी जी ने कहा कि इन्द्रियाँ तो देखने वाली हैं, दिखाने वाली नहीं **'स प्राचीं दिशमन्ववर्त्तते'** मन्त्र में 'स' शब्द का वाच्यार्थ क्या है? तब बाल शास्त्री जी ने कुछ न कहा, फिर पण्डित शिवसहाय जी ने कहा कि अन्तरिक्ष आदि गमन शान्ति करने का फल इस मन्त्र का अर्थ कहा जाता है।[११]

इस पर स्वामी जी ने कहा कि आपने वह प्रकरण देखा है तो किसी मन्त्र का अर्थ तो कहिये।

तब शिवसहाय जी चुप ही रहे। फिर विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि वेद किससे उत्पन्न हुए हैं?

इस पर स्वामी जी ने कहा कि वेद ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं।

विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि किस ईश्वर से? क्या न्याय शास्त्र प्रसिद्ध ईश्वर से वा योग शास्त्र प्रसिद्ध ईश्वर से अथवा वेदान्त शास्त्र प्रसिद्ध ईश्वर से इत्यादि।[१२]

इस पर स्वामी जी ने कहा कि क्या ईश्वर बहुत से हैं?

तब विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि ईश्वर तो एक ही है परन्तु वेद कौन से लक्षण वाले ईश्वर से प्रकाशित भये हैं?

इस पर स्वामी जी ने कहा कि सच्चिदानन्द लक्षण वाले ईश्वर से प्रकाशित भये हैं।

फिर विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा ईश्वर और वेदों में क्या सम्बन्ध है? क्या प्रतिपाद्य प्रतिपादक भाव वा जन्य जनक भाव अथवा समवाय भाव अथवा सेवक स्वामी भाव अथवा तादात्मय सम्बन्ध है इत्यादि।

इस पर स्वामी जी ने कहा कार्य्य कारण भाव सम्बन्ध है।

फिर विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि जैसे मन में ब्रह्म बुद्धि और सूर्य्य में ब्रह्म बुद्धि करके प्रतीक उपासना कही है वैसे ही सालिग्राम का पूजन भी ग्रहण करना चाहिये।[१३]

इस पर स्वामी जी ने कहा जैसे 'मनोब्रह्मेत्युपासीत' आदित्य ब्रह्मेत्युपासीत इत्यादि वचन वेद में देखने में आते हैं वैसे **'पाषाणादि ब्रह्मेत्युपासीत'** आदि वचन वेद में कहीं नहीं दीख पड़ते, फिर क्यों कर इसका ग्रहण हो सकता है?

तब पण्डित माधवाचार्य ने कहा-

'उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रतिजाग्रहि त्वमिष्टापूर्ते इति'

इस मन्त्र में 'पूर्ते' शब्द से किसका ग्रहण है?

इस पर स्वामी जी ने कहा वायी, कूप, तड़ाग और आराम का ही ग्रहण है।

माधवाचार्य ने कहा कि इससे पाषाणादि मूर्तिपूजन क्यों नहीं ग्रहण होता है?[१४]

इस पर स्वामी जी ने कहा कि पूर्त्त शब्द पूर्त्ति का वाचक है। इससे कदाचित् पाषाणादि मूर्तिपूजन का ग्रहण नहीं हो सकता। यदि शंका हो तो इस मन्त्र का निरुक्त और ब्राह्मण देखिये।

तब माधवाचार्य ने कहा कि पुराण शब्द वेदों में है वा नहीं? इस पर स्वामी जी ने कहा कि पुराण शब्द तो बहुत सी जगह वेदों में है पुराण शब्द से ब्रह्म वैवतादिक ग्रन्थों का कदाचित् ग्रहण नहीं हो सकता क्योंकि पुराण शब्द भूतकाल वाची है और सर्वत्र द्रव्य का विशेषण ही होता है।

फिर विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि बृहदारण्यकोपनिषद् के इस मन्त्र में कि -

''एतस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोथर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराणं श्लोका व्याख्यानुव्याख्यानानीति''

यह सब जो पठित है इसका प्रमाण है वा नहीं।[१५]

इस पर स्वामी जी ने कहा कि हाँ प्रमाण है फिर विशुद्धानन्द जी ने कहा कि जो श्लोक का भी प्रमाण है तो सबका प्रमाण आया।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि सत्य श्लोकों का प्रमाण होता है औरों का नहीं।

तब विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि यहाँ पुराण शब्द किस का विशेषण है?

इस पर स्वामी जी ने कहा कि पुस्तक लाइये तब इसका विचार हो। पं. माधवाचार्य ने वेदों के दो पत्रे निकाले[१६] और कहा कि यहाँ पुराण शब्द किसका विशेषण है?

thearyasamaj.org

स्वामी जी ने कहा कि कैसा वचन है, पढिये।

तब माधवाचार्य ने यह पढ़ा '**ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानीति**'।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि यहाँ पुराण शब्द ब्राह्मण का विशेषण है अर्थात् पुराने नाम सनातन ब्राह्मण हैं।

तब पण्डित बालशास्त्री जी आदि ने कहा कि क्या ब्राह्मण कोई नवीन भी होते हैं?[१७]

इस पर स्वामी जी ने कहा कि नवीन ब्राह्मण नहीं हैं परन्तु ऐसी शंका भी किसी को न हो इसलिये यहाँ यह विशेषण कहा है।

तब विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि यहाँ इतिहास शब्द के व्यवधान होने से कैसे विशेषण होगा।

इस पर स्वामीजी ने कहा कि क्या ऐसा नियम है कि व्यवधान से विशेषण नहीं हो सकता और अव्यवधान ही में होता है क्योंकि

'अजो नित्यश्शाश्वतोऽयम्पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे'

इस श्लोक में दूरस्थ देही का भी विशेषण नहीं है? और कहीं व्याकरणादि में भी यह नियम नहीं किया है कि समीपस्थ ही विशेषण होते हैं, दूरस्थ नहीं।[१८]

तब विशुद्धानन्द स्वामी जी ने कहा कि यहाँ इतिहास का तो पुराण शब्द विशेषण नहीं है इससे क्या इतिहास नवीन ग्रहण करना चाहिये।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि और जगह पर इतिहास का विशेषण पुराण शब्द है। सुनिये! इतिहास पुराण: पञ्चमो वेदानां वेद: इत्यादि में कहा है।

तब वामनाचार्य आदिकों ने कहा कि वेदों में यह पाठ ही कहीं भी नहीं है।[१९]

इस पर स्वामी जी ने कहा कि यदि वेदों में यह पाठ न होवे तो हमारा पराजय हो और जो हो तो तुम्हारा पराजय हो। यह प्रतिज्ञा लिखो, तब सब चुप ही रहे।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि व्याकरण जानने वाले इस पर कहें कि व्याकरण में कहीं कल्मसंज्ञा करी है वा नहीं।

तब बालशास्त्री ने कहा कि संज्ञा तो नहीं की है परन्तु एक सूत्र में भाष्यकार ने उपहास किया है।

इस पर स्वामी जी ने कहा कि किस सूत्र के महाभाष्य में संज्ञा तो नहीं की और उपहास किया है, यदि जानते हो तो इसके उदाहरण पूर्वक समाधान कहो।

बाल शास्त्री और औरों ने कुछ भी न कहा।

माधवाचार्य ने दो पत्रे वेदों के[२०] निकालकर सब पण्डितों के बीच में रख दिये और कहा कि यहाँ यज्ञ के समाप्त होने पर यजमान दसवें दिन पुराणों का पाठ सुने ऐसा लिखा है। यहाँ पुराण शब्द किसका विशेषण है?

स्वामी जी ने कहा कि पढ़ो इसमें किस प्रकार का पाठ है। जब किसी ने पाठ न किया तब विशुद्धानन्द जी ने पत्रे उठा के स्वामी जी के ओर करके कहा कि तुम ही पढ़ो।

स्वामी जी- आप ही इसका पाठ कीजिये।

तब विशुद्धानन्द स्वामी ने कहा कि मैं ऐनक के बिना पाठ नही कर सकता। ऐसा कहके वे पत्रे उठाकर विशुद्धानन्द स्वामी जी ने दयानन्द स्वामी जी के हाथ में दिये।

इस पर स्वामी जी दोनों पत्रे लेकर विचार करने लगे। इसमें अनुमान है कि पांच पल व्यतीत हुए होंगे कि ज्यों ही स्वामी जी यह उत्तर कहा चाहते थे कि "पुरानी जो विद्या है उसे पुराण विद्या कहते हैं और जो पुराण विद्या वेद है वहीं पुराण विद्या वेद कहाता है, इत्यादि से यहाँ ब्रह्मविद्या ही का ग्राह्य है क्योंकि पूर्व प्रकरण में ऋग्वेदादि चारों वेद आदि का तो श्रवण कहा है परन्तु उपनिषदों का नहीं कहा। इसलिये यहाँ उपनिषदों का ही ग्रहण है औरों का नहीं। पुरानी विद्या वेदों की ही ब्रह्म विद्या है इससे ब्रह्मवैवर्तादि नवीन ग्रन्थों का ग्रहण कभी नहीं कर सकते क्योंकि जो वहाँ ऐसा पाठ होता कि ब्रह्मवैवर्तादि १८ अन्य पुराण है सो तो वेद में[२१] कही ऐसा पाठ नहीं है। इसलिये कदाचित् अठारहों का ग्रहण नहीं हो सकता" ज्यों ही यह उत्तर कहना चाहते थे कि विशुद्धानन्द स्वामी उठ खड़े हुए और कहा कि हमको विलम्ब होता है[२२]। हम जाते हैं।[२३] तब सबके सब उठ खड़े हुए और कोलाहल करते हुए चले गए। इस अभिप्राय से कि लोगों पर विदित हो कि दयानन्द स्वामी का पराजय हुआ परन्तु जो दयानन्द स्वामी के चार पूर्वोक्त प्रश्न हैं उनका वेद में तो प्रमाण ही न निकला फिर क्यों कर उनका पराजय हुआ?[२४]

टिप्पणियाँ

१. आर्य दर्पण में यह हिन्दी उर्दू दोनों भाषाओं में छपा है। दोनों का मिलान करके यहाँ दिया है। जहाँ आवश्यक जाना विराम चिह्न दे दिये हैं। इससे पाठकों को सुविधा होती है।

२. काशी नरेश तथा उसके दक्षिणा भोगी पण्डितों ने शास्त्रार्थ में पहला अनर्थ यही तो किया ऋषि की माँग कितनी न्याय संगत थी। यह पाठक देख लें।

३. शास्त्रार्थ में दूसरा अनर्थ व अन्याय यह हुआ कि

thearyasamaj.org

पण्डितों का कोई मुखिया नहीं था। पण्डितों का जमघट बोलता था। महाराजा का कोई अंकुश ही नहीं था।

४. शास्त्रार्थ की तीसरी धांधली यह थी। वेद से प्रतिमा पूजन का प्रमाण ऋषि ने माँगा था। यह चुनौती दी थी। पण्डित मुख्य विषय से छूटते ही भाग निकले।

५. एक पश्चात् दूसरा पण्डित शास्त्रार्थ के विषय से भागने लगा। यह चौथी धांधली थी।

६. ऋषि ने प्रकरण से बाहर जाने से रोका पर कौन सुनता था? यह पाँचवी धांधली थी।

७. काशी नरेश ने वेद सबको कण्ठाग्र होने की तथा स्वामी विशुद्धानन्द ने सब कुछ कण्ठस्थ होने की डींग मारी थी। इस प्रश्न से सारी काशी की विद्या की पोल खुल गई।

८. ऋषि ने मनु जी का प्रमाण देकर प्रतिस्पर्धी का अहंकार चूर कर दिया। यहाँ उर्दू हिन्दी के पाठ में कुछ शब्द घटे बढ़े हैं। हमने मिलान करके यहाँ लिखा है। भाव भेद कोई नहीं है।

९. आर्य दर्पण की पाद टिप्पणी में ही लिखा है कि यह वेद वचन नहीं है। परन्तु जहाँ है वहाँ भी वेद विरुद्ध होने से प्रक्षिप्त है।

१०. यह कितना अनर्थकारी तर्क है कि वेद में प्रतिमा शब्द होने से प्रतिमा पूजन का विधान है। वेद में तो प्रमाद, पाप, निन्दा, अनृत, अकर्म, दस्यु, दुरित शब्द भी आये हैं तो क्या इससे प्रमादी, पापी, आलसी, दुष्कर्मी होना सिद्ध हो गया? शास्त्रार्थ के विषय से भागने की काशी में मनमानी की गई।

११. यहाँ उर्दू व हिन्दी के वृत्तान्त में शब्द भेद है। भाव भेद नहीं।

१२. स्वामी विशुद्धानन्द के कथन से सिद्ध है कि मूर्त्तिपूजकों के अनेक ईश्वर हैं। ये लोग दर्शनों में परस्पर विरोध मानते हैं। हिन्दुओं में फूट का बीज इन्होंने ही बोया। विधर्मियों ने इसी का लाभ उठाया।

१३. वेद तथा ईश्वर विषयक ये प्रश्न पाषाण पूजकों की कुटिल कुचाल थी। वेद से प्रतिमापूजन की पुष्टि करने का विषय तो उन्होंने जानबूझकर छोड़ दिया।

१४. श्री लक्ष्मण जी के ग्रन्थ के प्रथम भाग पृष्ठ २५५ पर माधवाचार्य की बजाय 'बालशास्त्री ने कहा' छप गया है। यह मुद्रण दोष समझा जावे। देखते जायें अब तक कितने विद्वान् ऋषि के सामने खड़े किये गये।

१५. ध्यान दीजिये यह नया विषय उठाया गया। शास्त्रार्थ का विषय पुराण नहीं था। मूर्तिपूजन के लिए श्रुति का प्रमाण देना था।

१६. ''यह सब तो पठित है'' ऐसा कहकर ऋषि की विद्वत्ता पर व्यंग्य कसा गया।

१७. आर्य दर्पण में भी यह पाद टिप्पणी मिलती है कि यह पण्डितों का ही मत है। स्वामी जी का नहीं। ये पत्रे वेद के नहीं गृह्यसूत्र के थे। वेद के नहीं। यह बहुत बडा छल था।

१८. यहाँ देखिये फिर नया पण्डित ऋषि के सामने खड़ा किया गया।

१९. विशेषण विषयक ऋषि की आपत्ति व प्रमाण का किसी से कुछ भी उत्तर नहीं बन सका।

२०. यह देखिये एक और विद्वान् को खड़ा होना पड़ा। एक के सामने काशी के कितने महारथी चित्त होते गये।

२१. ये पत्रे गृहसूत्र के थे, वेदों के नहीं। यह एक सुनियोजित षड्यन्त्र था। किसी एक के मस्तिष्क की उपज नहीं था।

२२. यह भी पण्डितों के मतानुसार कहा। यह स्वामी जी का मत नहीं।

२३. अध्यक्ष काशी नरेश ने तो सभा समाप्ति की घोषणा नहीं की। स्वामी विशुद्धानन्द की पहल से शास्त्रार्थ समाप्त हुआ और हुड़दंग मचने लगा।

२४. 'आर्यदर्पण' के उर्दू पाठ का अन्तिम वाक्य यहाँ नहीं दिया तो फिर कैसे समझा जावे कि काशी के पण्डितों का पराजय हुआ और दयानन्द स्वामी का जय।'' द्रष्टव्य आर्यदर्पण जनवरी सन् १८८० पृष्ठ २०

– वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

thearyasamaj.org

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

दक्षिण में बलिदानी परम्परा के ७५ वर्ष

देश व जाति के लिये जो जिए.....

कृतिशील आर्य सेनानी - स्वामी स्वात्मानन्द

- डॉ. नयनकुमार आचार्य

कीर्तिर्यस्य स जीवति-अपार धैर्य के साथ जिनका संघर्षमय जीवन समाज, देश व जाति के लिए व्यतीत हुआ हो, ऐसी आत्माएँ धन्य होती हैं। शरीर से वे इस संसार में न रहते हुए भी उनकी अमर कीर्ति गाथाएँ युगों-युगों तक आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्तम्भ बन जाती हैं। आर्य जगत् दक्षिण भारत के देशभक्तों से भलीभाँति परिचित हैं हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास को अपने अनोखे शौर्य व बलिदान से अमरता प्रदान करने वाले कई नरवीरों की गाथाएँ भले ही ज्ञात हैं, लेकिन प्रखर धैर्यधुरन्धर आर्य सेनानी, ऋषिभक्त स्वामी स्वात्मानन्द जी (रामचन्द्र जी मन्त्री-बिदरकर) के क्रान्तिकारी जीवन व साहस भरे कार्यों से शायद सभी परिचित नहीं होंगे। पद, प्रतिष्ठा व प्रसिद्धी से कोसों दूर रहकर श्री स्वामी जी ने मातृभूमि की रक्षा व आर्य समाज के प्रचार कार्य हेतु जो अनोखे कार्य किये हैं, वे निश्चय ही प्रेरणाप्रद हैं। हैदराबाद स्वतन्त्रताकालीन महाराष्ट्र का लातूर शहर व परिसर ऐसा ही क्रान्तकारी गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। यहाँ की पुरानी आर्यसमाज (गाँधी चौक) इस समय ८० वें वर्ष में पर्दापण कर रही है। इसी आर्य समाज के एक समय के बहुत ही क्रियाशील मन्त्री वह महान देशभक्त, स्वाधीनता सेनानी श्री रामचन्द्र जी बिदरकर जो क्रान्तिकारी जीवन के कार्यों के कारण तथा बाद में संन्यास दीक्षा लेकर स्वामी स्वात्मानन्द जी के नाम से सर्वत्र विख्यात हुए।

आरम्भिक जीवन- श्री स्वामी जी का जन्म सन् १९०४ में कर्नाटक के बीदर शहर में एक साधारण परिवार में हुआ। माता चन्द्रभागा बाई तथा पिता श्री तुकाराम डोईजोडे ये दोनों धार्मिक, सहिष्णु, स्नेहील स्वभाव के थे। इस दम्पति की रामचन्द्र, लक्ष्मण, पुण्डलिक एवं रत्नाबाई (सोनवे) ये चार संतानें हुई। इन सभी में बड़े होने के कारण रामचन्द्र जी पर परिवार की जिम्मेदारियाँ आ पड़ी। युवावस्था में सन् १९३० को वे अपने भाई व परिवार को लेकर लातूर आये। वैसे तो पहले से ही इनका कपड़ा सिलाई (दर्जी) का पारम्परिक व्यवसाय था। शायद बीदर में इस व्यवसाय में प्रगति नहीं हुई होगी, इस कारण उन्हें लातूर आना पड़ा। यहाँ के कपड़ा लाईन में उनका यह सिलाई काम बहुत ही उत्तम रीति से चलता था। उनकी दुकान में लगभग ३५ सिलाई मशीनें थी। बढ़िया काम की वजह से शहर में उनकी प्रतिष्ठित दर्जी के रूप में ख्याति हुई।

आर्यसमाज व स्वतन्त्रता संग्राम - लातूर के कई दर्जी (भावसार) लोगों पर आर्यसमाज के विचारों का प्रभाव रहा है। इस कारण रामचन्द्र जी भी इसी विचारधारा की ओर आकृष्ट हुए। वैदिक विचारों का इन पर ऐसा रंग जमा कि देखते ही देखते वे पक्के आर्यसमाजी बन गये। उस समय हैदराबाद स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्यसमाज की सक्रिय भूमिका थी। रामचन्द्र जी में भी क्षात्रवृत्ति कूट-कूटकर भरी थी, तब वे चुप-चाप थोड़े ही बैठते। अत: बडे उत्साह से इस आन्दोलन में सम्मिलित हुए और इस आन्दोलन का नेतृत्व भी किया। ऊँचा पूरा कद, बलिष्ट शरीर और धैर्य-वीरता होने से किसी प्रकार का अन्याय सहन करना, यह उनके बस का नहीं था। इन्हीं कारणों से निजाम के विरुद्ध चलाये गये आन्दोलन में वे जोश के साथ कूद पड़े।

उनकी निराली धाक- इस परिसर में आज भी उनका नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम में आपने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अनोखी धैर्यवृत्ति व शौर्यगुणों के कारण उनकी रजाकरों में एक प्रकार की निराली धाक थी। निजाम की पुलिस भी उनके अतुल बल के कारण सदैव भयभीत रहती थी। क्रान्तिकारों में वे दबंग के रूप में पहचाने जाते थे। अत: लोग इनसे बहुत डरते थे। वे मृत्यु को अपने हाथ में लेकर चलने वाले शूरता की शान, व वीर सैनिक थे। देशभक्ति का उत्साह इनके रग-रग में भरा हुआ था। अन्याय व अत्याचार के विरुद्ध लड़ना वे अपना परमधर्म समझते थे, किन्तु व्यर्थ ही किसी को कभी कष्ट नहीं दिया। अपूर्व साहस के साथ रजाकारों के अत्याचारों का जमकर मुकाबला किया और कितनों को मौत के घाट उतार दिया। 'मन्त्री जी' का नाम सुनते ही प्रतिपक्षियों में आतंक सा छाया रहता था। लातूर तथा परिसर के गाँवों में उनके क्रान्तिकारी जीवन व सहासपूर्ण

thearyasamaj.org

कार्यों की चर्चा होती रहती थी। बार्शी (जि. सोलापूर) इस ग्राम के समीप ही स्थापित चिंचोली कैम्प के वे प्रमुख थे। श्री स्वामी जी, जहाँ अन्य नागरिकों को देशकार्य के लिए प्रेरित करतें, वहीं कई धनवान् व्यापारियों को राष्ट्रकार्यों के लिए आर्थिक सहयोग हेतु आग्रह भी करते। उनके आवाह्न पर जनता अपना धनमाल व जेवरादि सम्पत्ति देशकार्य हेतु उन्हें प्रदान करते। एक बार लगभग ५० किलो सोना जमा हुआ, तब स्वामी जी ने यह सारा धन शासन के प्रतिनिधि (जिलाधीश) को सुपूर्द किया। यदि कोई व्यापारी स्वार्थवश सहयोग करने में हिचकिचाता, तो उसे वे समझाते और मातृभूमि की सेवा का महत्त्व बताकर सत्कर्म में प्रवृत्त करते। फिर भी कोई इस बात को न मानें, तो वे उसे अच्छा ही सबक सिखाते। एक बार ऐसा ही हुआ। लातूर का एक सधन व्यापारी समझाने बुझाने पर भी आर्थिक सहयोग के लिए तैयार नहीं हुआ, तब उसे लातूर के समीपस्थ हरंगुल नामक गाँव में कड़े रूप में दंडित किया। इतना होने पर वह तुरन्त सहयोग के लिए तैयार हुआ।

निष्काम कर्मयोगी – श्री स्वामी जी एक ऐसे सच्चे देशभक्त थे, जिन्होंने **'न मे कर्मफले स्पृहा'** इस सूक्ति के अनुसार भाव से माँ भारती की सेवा की। स्वतन्त्रता आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लेने पर भी कभी अपने कामों की चर्चा तक नहीं की। यहाँ तक कि स्वाधीनता सैनिक की पेन्शन लेने से भी इन्कार किया। बाद में आर्यजनों व सहयोगी मित्रों के बहुत समझाने पर वे मान गये। उनसे पूछने पर कि 'आपने देश व समाज के लिए इतना बड़ा काम किया है, तो पेन्शन क्यों नहीं लेते?' तब वे कहते- 'मैंने कर्तव्य भावना से देश का काम किया है। माता की रक्षा करना, पुत्र का दायित्व होता है, मैंने पैसों के लिए कोई काम नहीं किया है?' जब देश के गृहमन्त्री बूटासिंह जी थे, तब उन्हें दिल्ली आमन्त्रित किया गया। स्वामी जी के साथ मन्त्री महोदय ने चर्चा की। उनके क्रान्तिकारी कार्यों की गाथा सुनकर पेन्शन का फॉर्म भरने का आग्रह किया। बहुत विनती करने पर वे इसके लिये राजी हो गये, तब पेन्शन मजूंर हुई। वहीं पर स्वतन्त्रता सेनानी का प्रशस्ति पत्र देकर स्वामी जी का गौरव भी किया गया। इस कार्य के लिए स्वामी जी ने खुद आगे होकर पहल नहीं की, बल्कि भारत सरकार ने खुद आगे होकर सम्मानित किया।

आगे चलकर स्वामी जी महाराष्ट्र शासन की ओर से स्वाधीनता सैनिक गौरव समिति के विभागीय अध्यक्ष भी बनें। ये देश के लिए प्रामाणिक वृत्ति से कार्य करने वाले अनेकों स्वाधीनता सैनिकों को प्रमाण पत्र देने व पेन्शन मंजूर करने हेतु शासन को सिफारिशें की। इनके प्रयासों से सही मायने में देश के लिए कार्य करने वाले उन राष्ट्रभक्तों को योग्य न्याय मिला, जो सदैव प्रसिद्धी से पराङ्मुख रहते थे।

आर्यसमाज का प्रसार काय- देशसेवा के साथ ही स्वामी जी का वैदिक धर्म प्रचार कार्य में भी काफी योगदान रहा है। आर्यसमाज (गाँधी चौक) लातूर के वे लगभग २२ वर्ष मन्त्री रहे। उनके कार्यकाल में इस समाज की गतिविधियाँ प्रगतिपथ पर थी। आर्य विचारों के प्रसार हेतु वे सतत प्रयत्नशील थे। प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला वार्षिक उत्सव आर्य जनता के लिए वैचारिक ऊर्जासंवर्धन का स्वर्णिम अवसर माना जाता था। सभा सम्मेलनों पर आमन्त्रित उद्‌भट वैदिक विद्वानों को सुनने के लिए शहर व देहातों के जिज्ञासु श्रोतागण हजारों की संख्या में आते रहते थे। आज भी वह परम्परा जारी है। सन् १९५६ में स्वामी जी के मन्त्रित्वकाल में विभागीय आर्य महासम्मेलन सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, जिसके प्रभाव से अनेकों लोग आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुए। इस सम्मेलन में महात्मा आनन्द स्वामी सहित अन्य विद्वान् मनीषी पधारे थे। संस्था के पदाधिकारी भी उनकी आज्ञा में रहकर कार्य करते थे।

बाद में १९७४ में उन्हीं के निर्देशन में त्रिदिवसीय मराठवाड़ा स्तरीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें पूर्व प्रधानमन्त्री अटलबिहारी बाजपेयी, डॉ. सत्यप्रकाश, पूर्व सांसद ओमप्रकाश त्यागी, शिवकुमार शास्त्री आदि विद्वान् वक्ताओं को आमन्त्रित किया गया था। आर्य समाज को लोकोपयोगी बनाने में स्वामी जी अग्रणी रहे। दशहरे के पावन पर्व पर नगर में भव्य विजय-यात्रा (जुलूस) निकालने का श्रेय स्वामी जी को जाता है। आज भी नगरवासी बडे धूमधाम से प्रतिवर्ष यह दशहरा जुलूस निकालते हैं।

देववाणी के प्रचारक- लातूर में देववाणी संस्कृत भाषा के प्रचार हेतु स्वामी जी ने काफी प्रयास किये। संस्कृत अध्ययन केन्द्र चलाकर संस्कृत को जन-जन तक पहुँचाया। यद्यपि राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी माने जाने वाले इस शहर में सम्प्रति पुराने व नये मिलाकर गुरुकुलीय स्नातकों की संख्या लगभग ६० से अधिक है। इन्हीं स्नातकों को प्रेरणा देकर स्वामी जी ने उनके माध्यम से संस्कृत का प्रचार कराया। स्वयं संस्कृत सीख न सके, लेकिन समाज में इस भाषा को बीजारोपित करने में स्वामी जी की अहम

thearyasamaj.org

भूमिका रही है। भारतीय विद्या भवन की परीक्षाओं का केन्द्र भी उन्होंने चलाया। परीक्षाओं के आयोजन हेतु शहर से निधि संकलित कर छात्रों की व्यवस्था करते। साथ ही बच्चों को शुभगुणों से संस्कारित करने हेतु शिशु विहार केन्द्र भी संचालित किया। इस कार्य में नगर के प्रसिद्ध व्यापारी व वेद तथा संस्कृत के अध्येता श्री सेठ बलदवा जी का उन्हें विशेष सहयोग मिलता रहा। जब कभी धन की आवश्यकता पड़ती, तब स्वामी जी बलदवा जी के पास चले जाते और उनसे प्राप्त धनराशि द्वारा संस्कृत प्रचार, पुरस्कार वा अन्य वेदप्रचार आदि कार्य करवाते। स्थानीय ज्ञानेश्वर विद्यालय में संस्कृत प्रचार कार्य हेतु उनका सदैव आना-जाना रहता था। वहाँ के संस्कृत अध्यापक महानुभावपन्थी श्री शास्त्री जी से उनके घनिष्ठ सम्बन्ध रहें।

प्रसिद्ध भाषाविद् प्रो. श्री ओमप्रकाश जी होलीकर बताते हैं कि 'लातूर नगरी में आज संस्कृत का जो विशाल स्वरूप दिखाई दे रहा है, उसके मूल में स्वामी जी की तपस्या व पीठिका रही है। संस्कृत के प्रसार हेतु काम करने वाले इतने समर्पित व्यक्ति को मैंने पहली बार देखा है।'

अद्वितीय बलोपासक -बचपन से ही उन्हें व्यायाम से बहुत ही लगाव था। सब काम छोड़कर वे व्यायाम करते । इसलिए उनका शरीर सुडौल व वज्र के समान बन गया था। देश के बालक व युवक शरीरबल के धनी हो, इसीलिए आर्यसमाज में श्रद्धानन्द व्यायाम मन्दिर के नाम से विशाल व्यायामशाला की स्थापना की और आर्ययुवक व्यंकटेश हालिंगे को इसका अध्यक्ष बनाया। स्वामी जी की प्रेरणा से अनेकों युवक इस व्यायामशाला में आते रहे और अपने शरीरधन को संवर्धित करते रहें। मल्लखम्भ विद्या को भी स्वामी जी ने प्रोत्साहन दिया। फलस्वरूप अनेकों बच्चे-बच्चियों ने विभिन्न राष्ट्रीय व प्रान्तीय क्रीडा प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार भी प्राप्त किये हैं। व्यायामशाला के अखाड़े में कुस्ती लड़नेवाले अनेकों मल्ल भी स्पर्धाओं में विजयी रहे हैं। अनेकों युवक आर्यवीरदल के राष्ट्रीय शिविरों में प्रशिक्षण प्राप्त करते रहे। व्यायामशाला में जब भी किसी साहित्य की कमी हो, तब स्वामी जी तुरन्त शहर के दानी व्यापारी सेठ के पास पहुँच जाते और उन्हें वे साहित्य दिलवाने हेतु प्रोत्साहन देते और समय पर सभी प्रकार का साहित्य उपलब्ध भी होता। लातूर शहर में साथ ही समीपस्थ कव्हा नामक ग्राम में भी स्वामी जी ने व्यायामशाला खोलने हेतु पूर्व विधायक श्री पाटील को प्रेरित किया। इस तरह स्वामी स्वात्मानन्द जी आर्य समाज के माध्यम से शारीरिक उन्नति का पथ प्रशस्त करते रहे। आचार्य देवव्रत को आमन्त्रित कर वे प्रतिवर्ष आसन-प्राणायाम शिविर लगवाते, जिसका अनेकों योगप्रेमियों को लाभ मिलता रहा।

पारिवारिक जीवन - मन्त्री जी (रामचन्द्र जी) का गृहस्थाश्रम अल्पकालिक ही रहा। श्रीमती अनसूयाबाई उनकी सहधर्मिणी का नाम था। इन्हें कोई सन्तान नहीं हुई। प्लेग की बिमारी के कारण धर्मपत्नी का अकस्मात ही निधन हो गया। भरी जवानी में पत्नी के बिछुड जाने से उन पर गहरा आघात हुआ। फिर भी धैर्य के धनी रामचन्द्र ने पुनर्विवाह का विचार तक नहीं किया। किसी अनाथ बालिका को बचपन में ही गोद लिया और उसका शन्नोदेवी नाम रखा। इस कन्या को शुभसंस्कार, ऊँची शिक्षा आदि दिलाकर बड़ी होने पर उसका डोणगाँव के होनहार डॉक्टर युवक दिगम्बर मुले से विवाह कराया। सम्प्रति यह मुले परिवार उदगीर में फलता-फूलता हुआ प्रगतिपथ पर विराजमान है। छोटे दोनों भाई श्री लक्ष्मणराव व पुंडलिकराव भी अपने भ्राताश्री के पदचिह्नों पर चलते रहें। इन्होंने भी हैदराबाद स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया और आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर वैदिक विचारों से जुड़े रहे। अपने बड़े भाई से प्रेरणा पाकर ही अनुज लक्ष्मणराव बिदरकर ने अपनी कन्याओं को पढ़ाया और उनके अन्तर्जातीय विवाह कराये।

उत्तर भारत का भ्रमण व संन्यास दीक्षा- वैराग्यवृत्ति धारण कर मन्त्री जी स्वाध्याय, चिन्तन, ध्यान-धारणा आदि कार्यों में संलग्न होकर उत्तर भारत की ओर चल पड़े। दयानन्द मठ, दीनानगर (पंजाब) में कई माह तक साधना करते रहे। वहीं पर आर्यजगत् के वीतराग संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी का शुभ सान्निध्य पाकर उनसे संन्यास दीक्षा ली और स्वामी स्वात्मानन्द जी बन गये। कुछ समय तक वे हिमाचल के चंबा स्थित मठ में भी रहे। बाद में हरिद्वार के समीपस्थ महाविद्यालय ज्वालापुर में भी कुछ काल तक निवास किया। भोजन व भण्डारविभाग के प्रमुख बनकर आप गुरुकुलीय व्यवस्था में सहयोग देते रहे और ब्रह्मचारियों को राष्ट्रभक्ति व सुसंस्कारों का पाठ पढ़ाते रहे।

पुनश्च जन्मभूमि में - कई वर्ष उत्तर भारत में रहकर स्वामी जी महाराष्ट्र आये। लातूर के समीपस्थ कव्हा नामक ग्राम में छोटासा आश्रम (कुटिया)बनाकर तपस्वी जीवन

thearyasamaj.org
व्यतीत करने लगे। तब भोजनादि की असुविधा के कारण होने वाली अड़चनों को देखकर आर्यजनों ने उन्हें आर्यसमाज में रहने की विनती की। अत: उनके आग्रह पर वे आर्यसमाज में रहने लगे। यहाँ पर सादगीपूर्ण विरक्त वृत्ति धारण कर वे पूर्व की भाँति वेदप्रचारादि कार्यों में संलग्न होकर आर्यों को प्रेरणा देते रहे। यज्ञकार्य में उन्हें विशेष रुचि थी। अपनी आर्यसमाज में भव्य यज्ञशाला बनें, यह उनकी तीव्र अभिलाषा थी। इसके लिए वे अपनी ओर से लगभग ५० हजार रूपयों की राशि भी दान में दी। उनके चले जाने के बाद पदाधिकारियों ने एक विशाल यज्ञशाला निर्माण किया है।

अनोखी क्षमाशीलता – किसी कवि ने कहा है- क्षमा वीरस्य भूषणम्। अर्थात् क्षमाशीलता वीरपुरुषों का आभूषण होती है। जुलमी रजाकारों के अत्याचारों से लोहा लेने वाले नरवीर स्वात्मानन्द जी में प्रखर शौर्य के साथ ही अनूठी क्षमावृत्ति भी थी। शहर के किसी प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा एक अन्याय हुआ। एक मासूम महिला की असहायता का फायदा उठाकर उसने अत्याचार किया। नाजायज गलत सम्बन्ध स्थापित किया, परिणाम वही हुआ, जो होना था। पेट में पलने वाले बच्चे को अपनाने व उस महिला को आश्रय देने के लिए तैयार नहीं हुआ, तब वह स्त्री स्वामी जी के पास आयी और उसने वह सारी दु:खभरी कहानी सुना दी। उस पीड़ित महिला के वेदना सुनकर स्वामी जी ने उसे आश्वस्त किया। अपने कार्यकत्ताओं से उस अपराधी व्यक्ति की तलाश कर सामने लाने का आग्रह किया। स्वामी जी के प्रभाव से वह व्यक्ति उनके चरणों में आकर गिरा, उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया व क्षमा मांगी। स्वामी जी ने भी उसे अपूर्व क्षमादान करते हुए छोड़ दिया। उस महिला को किसी अज्ञात सुरक्षित स्थान पर रखकर पिता की भाँति उसकी देखभाल की। पूरा समय बीतने पर जब बच्चा पैदा हुआ, तब उस बच्चे की पालन-व्यवस्था का भार किसी अन्य परिवार पर सौंप दिया और उस महिला को समाज में प्रतिष्ठापूर्वक जीने का अधिकार प्रदान किया। ऐसे थे क्षमा, करुणा व दया के पुजारी श्री स्वामी स्वात्मानन्द जी

सभी को पितृतुल्य छत्रछाया – स्वामी जी के त्यागमय, कर्मठ जीवन को देखकर अनेकों लोग उनकी ओर आकृष्ट हो गये। सभी लोगों से उनके मधुर सम्बन्ध थे। उनका क्रान्तिकारी जीवन ही उन्हें यश गौरव दिलाने में पर्याप्त रहा। सर्व श्री स्वा. सै. वासुदेवराव होलीकर, स्वा. सै. शंकरराव जडे, स्वा. सै. निवृत्तिराव होलीकर, स्वा. सै. चन्द्रशेखर बाजपेयी, पू. उत्तममुनि, हरिशचन्द्र गुरु जी, हरिशचन्द्र पाटील आदि से उनका सदैव विचारविमर्श होता था। धनंजय पाटील, परांडेकर, पाराशर, तेरकर, प्रो. नरदेव गुडे, प्रो. विजय शिंदे, प्रो. मदनसुरे, प्रो. होलीकर, प्रो. दत्तात्रेय पवार, हालिंगे बंधू, कैप्टन डॉ. भारती जाधव आदियों पर उनका विशेष स्नेहाशीष रहा। श्री महेन्द्रकर सहित अनेकों आर्य परिवार स्वामी जी की श्रद्धाभाव भोजनादि की व्यवस्था करते थे।

स्वामी जी जीवन के अन्त तक आर्यसमाज लातूर में रहे। यहाँ का निवास भवन आज भी स्वामी जी के नाम से पहचाना जाता है। लेखक को भी छात्रावस्था में उनका प्रेमाशीर्वाद मिला व उनकी सेवा का सुअवसर प्राप्त हुआ। वृद्धावस्था में आर्य समाज के पदाधिकारियों, आर्यजनों व परिजनों ने उनकी श्रद्धाभाव से सेवा शुश्रुषा की। ऐसे महान तपोनिष्ठ महात्मा ने दि. ७ अगस्त १९९४ को अपनी जीवन यात्रा समाप्त की। ऐसे महान कर्मयोगी, महान देशभक्त को शत् शत् अभिवादन।

– श्रुतिगन्धम्, ब-१३, विद्यानगर,
परली-वैजनाथ जि. बीड (महाराष्ट्र)

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या स ूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

thearyasamaj.org

अण्डमान प्रचार यात्रा

- प्रभाकर आर्य

सभा द्वारा किये जा रहे प्रचार के अन्तर्गत इस वर्ष नेपाल और अण्डमान में वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य किया गया। श्री नौबतराम वानप्रस्थी ने तीन मास नेपाल में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का कार्य किया। सभा द्वारा दो सौ सत्यार्थप्रकाश नेपाली भाषा में ब्र. नन्दकिशोर द्वारा प्रकाशित व वितरित किये गये।

इसी क्रम में ब्र. कर्मवीर तथा ब्र. प्रभाकर ने गत दिनों पैंतीस दिनों तक अण्डमान में वैदिक धर्म का प्रचार किया। उनका यह यात्रा विवरण आपके लिए प्रेरणा देगा, इस भावना से प्रकाशित किया जा रहा है। -सम्पादक

पिछले अंक का शेष भाग.....

अगले दिन हमारे लिये महत्त्वपूर्ण था। पोर्ट ब्लेयर के एक मात्र स्थाई आर्य समाजी (जिनकी पहले चर्चा हो चुकी है) से भेंट हुयी। ८७ वर्ष के वही व्यक्ति हरिनारायण जी हमें उनके पास ले गये। इनका नाम है- आर. आनन्द कृष्णा। वृद्ध थे पर आर्य समाज के प्रति भावनाशील क्रान्तिकारियों के एक जत्थे में आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता भाई परमानन्द जी कालेपानी की सजा में अण्डमान आये। इन्हें जेल से बाहर लकड़ी काटने के लिये भेजा जाता था। बाराटांग में एक बड़ा लकडी का फर्म थी। वहाँ के अधिकारी आर. राधाकृष्णा जी से परमानन्द जी की बात होती थी। राधाकृष्णा जी आर्य समाज की विचार धारा से प्रभावित हुये। और कई व्यक्ति जुड़े, सक्रियता आयी। आजादी के बाद कई वर्षों तक साप्ताहिक सत्संग चलता था। जब तक ये लोग रहे आर्यसमाज का कार्य होता रहा । कुछ वापस (भारत) आ गये और कुछ वापस (परलोक) चले गये। कार्य शिथिल हो गया। आर. राधाकृष्णा जी की एक पुत्री और चार पुत्र थे-श्याम जी कृष्णा, जगदीश कृष्णा, शान्तिकृष्णा, आनन्द कृष्णा और सावित्री देवी। सभी में राधाकृष्णा जी ने आर्यसमाज की विचार धारा को भरा। बड़े तीन भाई वृद्धावस्था के कारण चल बसे। बचे आनन्द कृष्णा जी । इन्होंने और कुछ अन्य लोगों ने आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाने के लिये कोलकाता प्रतिनिधि सभा को पत्र लिखा, प्रतिनिधि सभा ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी को एक पत्र लिखा और अण्डमान में प्रचारक भेजने का निवेदन किया। स्वामी जी ने दो प्रचारक भेजे-स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी और वानप्रस्थी सत्यमुनि जी। दुर्भाग्यवश उसी वर्ष पाकिस्तान से युद्ध प्रारम्भ हो गया। इधर बांग्लादेश की ओर से अण्डमान पर हमला होने के डर से दोनों प्रचारकों को वापस आना पड़ा। ये लगभग एक वर्ष तक अण्डमान में रहे, पर स्थाई संस्था नहीं बना पाये। उनके आने के बाद कार्य फिर रुक गया। और आज वहाँ के स्थाई निवासियों में से केवल एक व्यक्ति आर्य समाजी है। इस सारी घटना से मुझे दो सीख मिली। पहली-एक भी व्यक्ति यदि सक्रिय हो तो भाई परमानन्द जी की तरह जेल में रहते हुये भी कार्य कर सकता है। दूसरी यदि कार्य को स्थायित्व देना है तो संस्था अनिवार्य है। इसके बाद स्वयं को प्रतिनिधि बताने वाली किसी सभा ने इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया (शायद आपसी व्यवस्तता के कारण) जब व्यक्ति को अच्छा नहीं मिलता तो कम अच्छे से काम चलाता है। कार्य करने के लिये कोई संस्था चाहिये, घर में लगाने के लिये किसी महापुरुष का चित्र भी चाहिये। दयानन्द नहीं मिला तो विवेकानन्द ही सही। यहाँ भी यही हुआ। आनन्द कृष्णा जी आर.एस.एस. से जुड़ गये। घर की टेबल पर विवेकानन्द जी का निवास है पर आज भी इच्छा है कि यहाँ आर्य समाज की कोई संस्था बने। हमें उनसे और उन्हें हमसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई कुछ साहित्य भी भेंट किया।

अगले दिन सरस्वती शिशु मन्दिर में बच्चों के लिये कार्यक्रम था। यह कार्यक्रम पीतम कुमारी नन्दा जी ने कराया था। आ.जी.टी. पब्लिक स्कूल में भी पहले इन्होंने ही व्यवस्था कराई थी। ८७ वर्षीय नारायण जी और ये भाई-बहन है, सामाजिक कार्यों में सक्रिय हैं। शायद इसीलिये युवा जैसे हैं। इस विद्यालय के बच्चे बड़े ही सभ्य व अनुशासित थे, क्योंकि अध्यापक स्वयं अनुशासित थे। सभी अध्यापकों का गणवेश था तो क्या मजाल कि बच्चे बिना गणवेश (ड्रेस) के विद्यालय आ जायें। विद्यालय से आते समय सचिवालय गये। पर्यटक विभाग अण्डमान के मुख्य सचिव श्री राकेश जी बाली आर्यसमाज की परम्परा से हैं। आपके पिता श्री देवदत्त बाली देहरादून निवासी आर्यसमाज के प्रचारक थे। यही संस्कार बाली जी

thearyasamaj.org

में आये। अण्डमान आने पर आपने यज्ञकुण्ड बनवाया और यज्ञ करना जारी रखा। सामाजिक कार्यों में इनकी पत्नी इनसे कहीं आगे हैं और उत्साह और उदारता की तो सीमा ही नहीं। बाली जी का परिचय तो हमारे पास था, पर भेंट नहीं हुयी थी इसलिये हम सीधे सचिवालय ही चले गये। वहाँ पता चला कि वे दिल्ली में हैं। १४ दिसम्बर को आयेंगे। सचिवालय से दूरभाष संख्या लेकर और साहित्य देकर वापस आ गये।

अण्डमान में प्रायः लोग बसाये हुये हैं। यहाँ मूल निवासी जारवा, निकोबारी, शौम्पेन, सेन्तिनिलीज , ओंगी और ग्रेट अण्डमानी जनजाति के लोग हैं। जारवा और सेन्तिनिलीज खूंखार जनजाति हैं। सभ्य लोगों के साथ ये तीर-कमान से बात करते हैं। ग्रेट अण्डमानीज जनजाति को सभ्य जीवन इतना पसंद आया कि सिगरेट, शराब पीना सीख गये। इनकी संख्या पांच हजार से तीस पर आ गयी। सबसे सरल स्वभाव के लोग निकोबारी जनजाति के हैं। इनकी संख्या बीस हजार है। आप सोचेंगे कि मैं सामान्य ज्ञान की बातें क्यों लिख रहा हूँ। दरसल हिन्दू समाज ने व्यक्ति की कीमत को नहीं समझा, पर जब वही व्यक्ति शत्रु के खेमे में खड़ा होकर उनका बल बढ़ाता है तो झटका लगता है। बाकी जनजातियाँ या तो खतरनाक हैं या कट्टर। पर निकोबारी लोग मिलनसार हैं, एक दम निस्वार्थी। पर आप आश्चर्य करेंगे कि इनमें से भी हिन्दू नहीं है। अधिकतर ईसाईयों ने झपट्टा मार लिया, बचे-खुचे इस्लाम ले गया। पिछले डेढ़ सौ वर्षों में हमारे संगठनों ने कितना काम किया, यह इसका उदाहरण है। ये निकोबारी आज सरकारी दफ्तरों में कार्यरत हैं खेलों में अग्रणी हैं। पूरे अण्डमान में कदम-कदम पर चर्च के दर्शन हो जायेगें । वैसे तो मन्दिर या अन्य हिन्दू संस्थायें भी बहुत हैं, पर सभी संसार से विरक्त हैं। भगवान् को सुबह-शाम संगीत सुनाकर इतिश्री कर लेते हैं। भक्त जनों को भी यही उपदेश देते हैं कि संसार माया है, इससे दूर रहो । कैसे रहा जायेगा। ये शायद इन्हें भी नहीं पता। खैर, स्थिति शान्त परन्तु गम्भीर है। ऐसे में यहाँ पर एक आर्यसमाज की आवश्यकता है, जो कि आन्तरिक राजनीति से परे हो। वे इस असमन्जस में ना रहे कि उसकी आधिकारिक मुख्य सभाओं में से कौन सी है। नहीं तो भइया जो ऊपर होता वही नीचे भी होगा। एक आर्यसमाज की चार समाजें बन जायेंगी। शाखायें खोलने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

दस दिसम्बर बुधवार को हम लोग बाराटांग के लिये निकले। रास्ते में घने जंगल और जारवाओं का इलाका पड़ता है। जितने क्षेत्र में जारवाओं का निवास है, उतने क्षेत्र में उतरना, बस रोकना, फोटो खीचंना आदि मना है। पुलिस की एक गाड़ी साथ चलती है। बाराटांग में चूने की गुफायें हैं। जिससे पत्थरों की विभिन्न आकृतियाँ बन गयी हैं। हिन्दू लोग इन्हीं आकृतियों में अपने देवी-देवता को ढूंढते हुये मिल जाते हैं। किसी को गणेश बताते हैं किसी को शिवलिंग। ये आकृतियाँ इन्हें खुले में मिल जाती तो कई मन्दिर बन जाते। कुल मिलाकर अच्छा प्राकृतिक स्थल है। अगले दिन बम्बू फ्लैट के सांई मन्दिर में आचार्य कर्मवीर जी का व्याख्यान हुआ। विषय था आश्रम व्यवस्था। अगले गुरुवार के लिये भी निमन्त्रण मिल गया। १२ दिसम्बर को एक टापू पर गये, जिसे लोग हैवलॉक कहते हैं। चले तो गये पर वापस आने के लिये टिकट ही नहीं मिला। वहाँ के सारे भोजनालय मांस से परिपूर्ण थे। हमारा अन्तिम सहारा था चना, उसके सहयोगी के रूप में बिस्किट और ब्रेड ने भी अच्छा साथ दिया। जैसे तैसे एक रात और दो दिन बिताये। एशिया का सबसे सुन्दर समुद्री किनारा (बीच) यहीं पर है। समुद्र के अन्दर की अनोखी दुनिया को प्रत्यक्ष देखने का अनुभव भी यहीं पर किया। दो दिन बाद पर्यटन विभाग के सचिव राकेश बाली जी से भेंट हुयी। मिलकर सन्तुष्टि हुयी। उन्हीं ने अपने सहयोगी विवेक जी (झुंझुनु निवासी) से भी परिचय करवाया। विवेक जी पहले से ही आर्यसमाज से बहुत प्रभावित हैं। शाम को बाली जी की गाड़ी घर पर लेने के लिए आयी। बातचीत के दौरान बाली जी की पत्नी ने कहा कि मैं जब से यहाँ आयी हूँ तभी से सोच रही हूँ कि अपनी भी एक संस्था यहाँ होनी चाहिये। पतिदेव राजकीय सेवा में हैं इसलिये हम प्रत्यक्ष रूप से कार्य नहीं कर सकते पर सहयोग अवश्य करेंगे। कुल मिलाकर भेंट अच्छी रही। आगे तीन दिनों तक विवेकानन्द केन्द्रीय विद्यालय की अलग-अलग शाखाओं में तीन कार्यक्रम हुये। उसी विद्यालय में सहायक प्रधानाध्यापिका अर्चना गुप्ता जी से पता चला कि उनके पतिदेव की पूरी ननिहाल आर्य समाजी हैं। पतिदेव अशोक गुप्ता जी पोर्टब्लेयर में पशु-चिकित्सक हैं। उनसे भी मिले। अशोक जी विनम्र व व्यवहार कुशल हैं, पर बोले कि भाई मैं तो सनातनी हूँ, मूर्तिपूजा करता हूँ। शाम के भोजन का निमन्त्रण मिला हुआ था। इस पूरी यात्रा में पहली बार किसी ने भोजन के लिये बुलाया था। ढाबे के भोजन से ऊबकर जब ये भोजन किया तो कुछ तृप्ति मिली। भोजन

thearyasamaj.org

सरोजदास जी के घर पर हुआ। सरोजदास जी मूल से ओडिशा के हैं पेशे से कॉन्ट्रैक्टर हैं, स्वभाव से धार्मिक हैं और व्यवहार से परोपकारी हैं। जब भी हमें आवश्यकता हुयी अपनी कार के साथ ये सदैव तैयार रहते थे। भोजन के समय आचार्य जी ने उपदेश भी दिया। सरोज जी ने सिगरेट छोड़ने का संकल्प लिया और छोड़ भी दी।

मैं पहले चर्चा कर चुका हूँ यहाँ राजकीय विद्यालयों में कार्यक्रम की अनुमति मिलना बड़ा कठिन है। पर आचार्य जी की सतत पदयात्रा के परिणाम स्वरूप अन्तिम सप्ताह में अनुमति मिल गई। अनुमति मिलने के बाद जब हम पहले विद्यालय में गये तो सहायक शिक्षा निदेशक भी वहीं पर आयीं और हमें अध्यापकों के सामने बैठाकर बोली शिक्षा सचिव का आदेश है कि पहले अध्यापकों की कक्षा लगवाओ। सन्तुष्टि हो जाए तब विद्यार्थियों के बीच कक्षा होगी। अब पहले अध्यापकों को घुट्टी पिलाई तब कहीं जाकर आगे का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसी दिन एक कार्यक्रम गुरुद्वारा द्वारा संचालित खालसा पब्लिक स्कूल में भी हुआ। वहाँ पर पहले क्रिस्मस डे मनाया गया, अग्रेंजी गीत गाये गये। उन गीतों पर गुरुद्वारे के ग्रन्थी जी तबला बजाकर संगीत दे रहे थे। यह सब देखकर आश्चर्य हुआ। २८ दिसम्बर को हमें वापस आना था। आने से दो दिन पहले-पहले बाली जी के घर पर एक यज्ञ का आयोजन रखा गया। इस पूरी यात्रा में जिन लोगों से हमारा परिचय हुआ था, सभी को बुलाया। यज्ञ के बाद इसी विषय पर चर्चा हुई की अण्डमान में आर्यसमाज का कार्य कैसे किया जाये। चर्चा हुई कि लोग सहयोग तो दे सकते हैं, देगें ही पर किसी एक मुख्य व्यक्ति को वहाँ रहकर टिककर इस कार्य को सम्भालना होगा। इति। - दिल्ली

सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार

गत विश्व पुस्तक मेले में सभा द्वारा पांच हजार सत्यार्थप्रकाश (हिन्दी), दो हजार सत्यार्थप्रकाश (अंग्रेजी), ऋषि दयानन्द की जीवनी पाँच हजार, दो हजार सी.डी. का निःशुल्क वितरण किया। जिसकी सज्जनों द्वारा बहुत प्रशंसा की गई। अब सज्जनों का फिर उसी प्रकार के कार्यक्रम की मांग कर रहे हैं।

इस बार सभा ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्यार्थप्रकाश को चार भाषाओं में वितरित करने की योजना बनाई है, क्रमशः हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू का सत्यार्थप्रकाश प्रकाशन की प्रक्रिया में है।

ऋषि जीवनी भी अंग्रेजी, हिन्दी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जा रही है। सभी धर्मानुरागियों से निवेदन है, इस कार्य के लिए आप जितना अधिक सहयोग प्रदान करेंगे। सभा उतने ही विशाल रूप में इस कार्यक्रम को सम्पन्न करेगी। पूर्व की भाँति आपका सहयोग व समर्थन प्राप्त होगा।

सहयोग राशि निम्न क्रमांक के खातों में जमा कराई जा सकती है अथवा बैंक ड्राफ्ट, चेक द्वारा प्रेषित कर कार्यालय में जमा कराई जा सकती है।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर। IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर। IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को युक्ति और विद्या से सेवन किये हुए सब सृष्टिस्थ पदार्थ शरीर, आत्मा और सामाजिक सुख कराने वाले होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५७

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८

thearyasamaj.org

तीर्थराज पुष्कर में महर्षि के प्रचार का प्रभाव

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रभाव केवल धनी-मानी सम्पन्न लोगों एवं राजा महाराजाओं पर ही नहीं पड़ा, अपितु सामान्य लोगों पर भी पड़ा। ''आर्य प्रेमी'' पत्रिका के फरवरी-मार्च १९६९ के महर्षि श्रद्धाञ्जलि अंक में प्रकाशित आलेख हम पाठकों के लाभार्थ प्रकाशित कर रहे हैं **- सम्पादक**

'मेरी अन्त्येष्टि संस्कार विधि के अनुसार हो'

वेदोद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जब तीर्थराज पुष्कर पधारते थे तब सुप्रसिद्ध ब्रह्मा जी के मन्दिर में विराजते थे।

मन्दिर के महन्त पारस्परिक मतभेदों की उपेक्षा करते हुए संन्यासी मात्र का स्वागत सत्कार करते थे।

महर्षि का आसन दक्षिणाभिमुख तिबारे में लगता था और महर्षि इसी तिबारे में विराजकर वेदभाष्य करते थे। सांयकालीन आरती के पश्चात् महर्षि के प्रवचन ब्रह्मा जी के घाट पर होते थे पुष्कर के पण्डे पोपलीला का खण्डन सुन बहुत ही कुढ़ते थे परन्तु ब्रह्मा जी के मन्दिर के महन्त के आतंक के कारण कुछ कर नहीं पाते थे। मन्दिरों में पुरुषों की अपेक्षा देवियाँ अधिक आती हैं।

इन देवियों में पुष्करवासिनी एक देवी जब-जब मन्दिर आती अथवा घाट पर महर्षि के प्रवचन सुनती उनसे उसकी श्रद्धा महर्षि के प्रति बढ़ती गई।

कालान्तर में वह देवी वृद्धा हुई और अन्तिम काल निकट आ गया। परन्तु अत्यन्त छटपटाने पर भी प्राण नहीं छूटते थे।

देवी के पुत्र ने अत्यन्त कातर हो माता से पूछा कि माँ तेरे प्राण कहाँ अटक रहे हैं। देवी ने उत्तर दिया- बेटा यह न बताने में ही मेरा और तेरा भला है। बताकर मैं तुझे काल के गाल में नहीं डालूँगी।

पुत्र ने जब अत्यन्त आग्रह किया तो देवी ने कहा कि ब्रह्मा जी के मन्दिर में जो तेजस्वी महाराज तिबारे में बिराज कर शास्त्र लिखते थे और घाट पर पोपों का खण्डन करते थे, उनकी लिखी संस्कार विधि के अनुसार मेरा दाग करे तो मेरे प्राण छूटे। पर बेटा ऐसा नहीं होने पावेगा। दुष्ट पण्डे तेरा अटेरण कर देगें। पुत्र ने कहा- माँ तू निश्चिन्त हो प्राण छोड़। अथवा तो तेरी अन्त्येष्टि संस्कारविधि के अनुसार होगी और नहीं तो मेरा और तेरा दाग साथ ही चिता पर होगा। वृद्धा ने शरीर त्याग दिया। उन दिनों पुष्कर में आर्य समाज का कोई चिह्न नहीं था।

अजमेर के तत्कालीन आर्य समाज में संभवतया अधिक से अधिक १०-१५ सभासद होंगे। वृद्धा के पुत्र ने अजमेर आर्य समाज के मन्त्री जी के पास अपनी माता की अन्तिम इच्छा की सूचना भिजवाई और कहलाया कि आपके सहयोग की प्रतीक्षा उत्कंठापूर्वक करुँगा। मंत्री जी ने उत्तर भिजवाया कि निश्चित रहो, प्रात: काल होते हम अवश्य आवेंगे और जैसी परिस्थिति होगी उस का सामना करेंगे। मंत्री जी ने स्थानीय सब सभासदों को सूचना भिजवाई।

इन सभासदों में एक सभासद ऐसे थे कि जो तुर्रा गाने वालों और खेल-तमाशों के स्थानीय अखाड़ों के उस्ताद थे।

इन सभासद के पास जब सन्देश पहुँचा तो उन्होंने अखाड़ों के चौधरी से कहा कि तुम मेरी जगह किसी और को अखाड़ों का उस्ताद बनाओ। मैं पुष्कर जा रहा हूँ और सम्भव है जीवित नहीं आऊँ। चौधरी ने पूछा क्या बात है और वास्तविकता जान कर कहा, ये देवी तो हमारी बिरादरी की है। तत्काल चौधरी जी ने बिरादरी में खबर कराई और लगभग ३००-३५० व्यक्ति रातोंरात पुष्कर पहुँचे। इधर अन्य आर्य सभासद भी हवन सामग्री लेकर प्रात:काल होते ही पहुँच गये। इतना समारोह और बलिदान भाव देख कर पण्डों का साहस विरोध करने को नहीं हुआ। अन्त्येष्टि किस धूमधाम से हुई होगी इस का अनुमान पाठक स्वयं कर लें। कहते हैं उस दिन पुष्करराज की किसी दुकान में घृत और नारियल नहीं बचे सब खरीद लिये गये। इस अन्त्येष्टि का प्रभाव चिरकाल तक रहा।

thearyasamaj.org

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१८५. श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.)	
१८६. मोटापा (सी.डी.)	४०.००
१८७. योगनिद्रा (सी.डी.)	३०.००
१८८. ध्यान (सी.डी.)	
१९९. योगनिद्रा (कैसेट)	३०.००
१९०. ध्यान (कैसेट)	३०.००

श्री रावसाहब रामविलास शारदा

१९१. आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र)	१००.००

डॉ. रामप्रकाश आर्य

१९२. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं)	२५०.००

महर्षि गार्ग्य

१९३. सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठः)	२५.००

डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा

१९४. वेदार्थ विमर्शः (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्)	२५.००
१९५. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया)	५१.००
१९६. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण)	३१.००

महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि

१९७. वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग)	१६०.००
१९८. वाल्मीकि रामायण–(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग)	१६०.००

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१९९. महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग)	२००.००
२००. महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग)	२५०.००

Prof. Tulsi Ram

201. The Book Of Prayer (Aryabhivinaya)	35.00
202. Kashi Debate on Idol Worship	20.00
203. A Critique of Swami Narayan Sect	20.00
204. An Examination of Vallabha Sect	20.00
205. Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi)	20.00
206. Bhramochhedan (New Edition)	25.00
207. Bhranti Nivarana	35.00
208. **Atmakatha**- Swami Dayanand Saraswati	20.00
209. Bhramochhedan	5.00
210. Chandapur Fair	5.00

DR. KHAZAN SINGH

211. Gokaruna Nidhi	12.00

DEENBANDHU HARVILAS SARDA

212. Life of Dayanand Saraswati	200.00

SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI

213. Dayanand and His Mission	5.00
214. Dayanand and interpretation of Vedas	5.00
२१५. पवित्र धरोहर (सी.डी.)	५१.००

आचार्य उदयवीर शास्त्री

२१६. जीवन के मोड़ (सजिल्द)	२५०.००

अन्य लेखकों के ग्रन्थ–निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है।

thearyasamaj.org

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	श्री गजानन्द आर्य	
२१७.	वेद सौरभ	१००.००
२१८.	Gokarunanidhi (Eng.)	२५.००
	डॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)	
२१९.	मनुस्मृति	३००.००
२२०.	महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	१५०.००
	सत्यानन्द वेदवागीश:	
२२१.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड)	३००.००
२२२.	दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड)	३५०.००
	डॉ. वेदपाल सुनीथ	
२२३.	माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द)	५०.००
२२४.	शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य(अजिल्द)	७०.००
२२५.	शतपथीययूप ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द)	१५०.००
२२६.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण)	५०.००
२२७.	यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण)	२५.००
	आचार्य सत्यव्रत शास्त्री	
२२८.	उणादिकोष	८०.००
२२९.	दयानन्द लहरी	५०.००
	प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार	
२३०.	वेदाध्ययन (भाग–१)	६.००
२३१.	वेदाध्ययन (भाग–२)	७.००
२३२.	वेदाध्ययन (भाग–१०)	६.००
२३३.	प्रार्थना सुमन	४.००
२३४.	ईश्वर! मुझे सुखी कर	
२३५.	कौन तुझको भजते हैं?	८.००
२३६.	पावमानी वरदा वेदमाता	९.००
२३७.	प्रभात वन्दन	६.००
२३८.	भक्ति भरे भजन	११०.००
२३९.	विनय सुमन (भाग–३)	६.००
२४०.	वेद सुधा	८.००
२४१.	वेद पढ़ो और पढ़ाओ	१००.००
२४२.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–२)	६.००
२४३.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–३)	५.००
२४४.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–४)	९.००
२४५.	वैदिक रश्मियाँ (भाग–५)	६.००
२४६.	Quest for the Infinite	20.00
२४७.	वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार)	१५०.००
	श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	
२४८.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–१)	
२४९.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–२)	१६०.००
२५०.	गंगा ज्ञान धारा (भाग–३)	१७०.००
२५१.	अमर कथा पं. लेखराम	६०.००
२५२.	कवि मनीषी पं. चमूपति	१६०.००
२५३.	कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में	२००.००
२५४.	निष्कलंक दयानन्द	१६०.००
२५५.	मेहता जैमिनी	१५०.००
२५६.	कुरान वेद की छांव में	१५०.००
२५७.	जम्मू शास्त्रार्थ	३०.००
२५८.	महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव	२०.००
२५९.	श्री रामचन्द्र के उपदेश	२५.००
२६०.	धरती हो गई लहुलुहान	३०.००
	विविध ग्रन्थ	
२६१.	नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन	२०.००
२६२.	उपनिषद् दीपिका	७०.००
२६३.	आर्य समाज के दस नियम	१०.००
२६४.	मद्यनिषेध शिक्षित शतकम्	१५.००
२६५.	आर्यसमाज क्या है ?	८.००
२६६.	जीवन का उद्देश्य	२०.००

thearyasamaj.org

२६७.	वेदोपदेश	३०.००
२६८.	सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन	२०.००
२६९.	भगवान् राम और राम-भक्त	२५.००
२७०.	जीवन निर्माण	२५.००
२७१.	१०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म	२५.००
२७२.	दयानन्द शतक	८.००
२७३.	जागृति पुष्प	८.००
२७४.	त्यागवाद	२५.००
२७५.	भस्मान्तं शरीरम्	८.००
२७६.	जीवन मृत्यु का चिन्तन	२०.००
२७७.	ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप	१०.००
२७८.	कर्म करो महान बनो	१४.००
२७९.	अष्टाध्यायी सूत्रपाठ	५०.००
२८०.	आनन्द बहार शायरी	१५.००
२८१.	वैदिक वीर गर्जना	२५.००
२८२.	पर्यावरण विज्ञानम्	२०.००

DR. HARISH CHANDRA

283	The Human Nature & Human Food	12.00
284.	Vedas & Us	15.00
285.	What in the Law of Karma	150.00
286.	As Simple as it Get	80.00
287.	The Thought for Food	150.00
288.	Marriage Family & Love	15.00
289.	Enriching the Life	150.00

डॉ. वेदप्रकाश गुप्त

२९०.	दयानन्द दर्शन	६०.००
२९१.	Philoshophy of Dayanand	150.00
२९२.	महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन	२०.००

श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

२९३.	आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु	६०.००
२९४.	आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी)	४०.००

आर्य-पथ

- राजेश माहेश्वरी

हम हैं उस पथिक के समान
जिसे कर्तव्य बोध है
पर नजर नही आता है
सही रास्ता
अनेक रास्तों के बीच
हो जाता है दिग्भ्रमित।
इस भ्रम कोतोड़कर
रात्रि की कालिमा को देखकर
स्वर्णिम प्रभात की ओर
गमन करने वाला ही
पाता है सुखद अनुभूति
और सफल जीवन की संज्ञा।
हमें संकल्पित होना चाहिए कि
कितनी भी बाधाएँ आएँ
कभी नहीं होंगे
विचलित और निरुत्साहित।
जब आर्यपुत्र
मेहनत, लगन और सच्चाई से
जीवन में करता है संघर्ष
तब वह कभी नहीं होता है
पराजित।
ऐसी जीवन-शैली ही
कहलाती है जीने की कला
औरप्रतिकूल समय में
मार्गदर्शन देकर
बन जाती है
जीवन-शिला।

१०६, नया गाँव हाउसिंग सोसाइटी,
रामपुर, जबलपुर, म.प्र.

thearyasamaj.org

ऊमर काव्य

- ऊमरदान लालस

राजस्थान के गौरव राजस्थानी भाषा के कवि उमरदान जी का अमर काव्य हमें परोपकारिणी सभा के सम्माननीय सदस्य डॉ. खेतलखानी जी की कृपा से प्राप्त हुआ। इस पुस्तक का तीसरा संस्करण १९३० में प्रकाशित हुआ था। इसमें उमरदान जी की अनेक रचनाओं का संग्रह है। इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या ६० से ९४ तक 'दयानन्द री दया' नाम से उनकी रचना प्रकाशित है। कवि और काव्य दोनों ही महत्त्वपूर्ण होने से पाठकों के लाभार्थ दयानन्द दर्शन को प्रकाशित कर रहे हैं। यह एक इतिहास का भाग है। पाठक लाभ उठा सकेंगे।

- सम्पादक

पिछले अंक का शेष......

[illegible]निजान वृन्द[1] कँवल कुमलाया,
गीत कुकवि जणु स्यालां[2] गाया।
[illegible] भगतां[3] सोर मचाया,
काली रात जरख[4] कुरलाया[5] ॥२५॥
[illegible] ऊपर ऊनालो[6] आयो,
दीन जनां दोरो[7] दरसायो।
[illegible] ज्ञान कोई नहिं पायो,
कूके लोक हुवो अति कायो[8] ॥२६॥
[illegible]र अन्तर में करुणां आई,
सारे देस करण सुख दाई।
मिन्दर तीर्थ पोवां[9] मंडाई,
खर पावे खारो जल खाई ॥२७॥
च्यार सम्प्रदा जिण हित चाली,
प्रगट हुई ज्यूं झांझी पाली।
[illegible] नीर भरण नें म्हाली,
खारो जल ऊंडो तल खाली ॥२८॥

१—टोला। २—सियार, गीदड़। ३—भक्त। ४—गदहा के [illegible] एक जंगली जानवर। ५—चिल्लाना। ६—उष्ण काल, [illegible] के दिन। ७—कठिन। ८—तंग होना। ९—प्याऊएं।

thearyasamaj.org

वल्लभ[१] कूप खिणायो[२] बेड़ो,[३]
भरियो नीर भिरायो भेड़ो।
नींबे[४] तलो निकाल्यो नेड़ो,[५]
जिण रो आब[६] नांव रेजेड़ो[७] ॥२६॥

१—इनका जन्म वि० सं० १५३५ बैसाख बदि ११ सोमवार (ता० ३०–३–१४७८ ई०) को चंपारन-सारन के पास चौंरा गाँव में हुआ, जब इनके पिता तैलंग ब्राह्मण (लक्ष्मणभट्ट) दक्षिण से काशी में जा बसे थे। ये श्रीकृष्ण को विष्णु का अवतार मानते थे। इस मत के अनुयायी अधिकांश भाटिया हैं। जैसलमेर में यादव वंशी राजा भाटी सं० ६८० वि० के आस पास हुआ है। उसके वंशधर यादव के बजाय "भाटी राजपूत" कहलाये। शायद इन्हीं भाटी राजपूतों में से मुसलमानी काल में भाटिया वैश्य बने हैं। वल्लभ स्वामी के दो पुत्र थे, गोपीनाथ और विट्ठलनाथ। गोपीनाथ का वंश नहीं चला। गोस्वामी विट्ठलनाथ के ७ पुत्र—गिरधर, गोविंद, बालकृष्ण, गोकलनाथ, रघुनाथ, यदुनाथ और घनश्याम थे। जिन से ७ गादियें हुई और इनके वंशधर गोकुलिये गुसाँई हैं। वल्लभाचार्य का देहान्त काशी में सं० १५८७ आषाढ़ बदि २ रविवार (ता० १२–६–१५३० ई०) को हुआ था। २—खुदाया। ३—दो घड़े, दुहरा। ४—ये १६वीं शताब्दी के अंतिम भाग में हुये हैं। वैष्णवों की चौथी सम्प्रदाय के यह जन्मदाता थे। इनके केशव और हरिव्यास नामक दो शिष्य थे। ५—नजदीक। ६—पानी। ७—जैसा।

thearyasamaj.org

माधव[1] साधन अरठ मंडायो,
खारो मुख ले घणो खिडायो[2] ।
छाक[3] पियो जिण पेट छुडायो,
भारी पाणी जन्म भंडायो ॥३०॥
शंकर सागर हुग्गो सुरड़ा,[4]
करण मिले नहिं पांणी कुरड़ा[5] ।
चोभ[6] मांय ठहरे नहिं चुरड़ा[7]
जिण री पाल पड़े दस दुरड़ा[8] ॥३१॥
दस-नांमी[9] दस हूँ दिस दोड़े,

१—वेदों के भाष्यकर्त्ता सायणाचार्य के बड़े भाई जो दक्षिण में पम्पा नगरी में जन्मे थे। ये विजयनगर के राजा बुक्कराय के कुलगुरु व मुख्य मंत्री थे। सं० १३६० वि० में इन्होंने संन्यास लिया। ६० वर्ष की आयु में ये स्वर्ग को सिधारे। इन्होंने पाराशर संहिता का भाष्य लिखा और वैष्णवों की दूसरी सम्प्रदाय चलाई थी। २- चलायो। ३—खुश होकर ४—बेशर्म। ५—कुल्ले। ६—तालाब का बीचला भाग। ७—चुल्लू। ८—खड्डे। ९—ये संन्यासियों का एक भेद है। इस फिर्के में भी १० भेद और हैं। जो जिस भेद का होता है वह अपने नाम के अन्त में उस भेद का सूचक तीर्थ, आश्रम, वन, आरन्य, गिरी, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती, और पुरी शब्द जोड़ लेता है। इस १० भेदों के संन्यासी गुसाँई, स्वामी, महापुरुष और अतीत भी कहलाते हैं। यह सब शिवजी को मानते हैं। घरबारी और नागे दोनों यह होते हैं। संन्यास आश्रम की पुरानी लीक पीटने को गृहस्थ भी अपने मुर्दे को गाड़ते हैं। और सिखासूत्र भी नहीं रखते।

thearyasamaj.org

थल खोसै[1] धापे नहिं थोड़े।
मोसै[2] परजा वेगै[3] मोड़े,[4]
ग्यान ध्यान सब धर्‌यो गपोड़े॥३२॥

रामांनुज[5] रिद[6] गुपत रखावे,
सिड़ियो[7] नीर वास सरसावे[8]।
मांहिं सिंवाल[9] जाल नहिं मावे,
पैसै बिन छांटो[10] नहिं पावे॥३३॥

महाबीर[11] गोतम[12] मुख मोड़ी,
चौतीणों[13] खिणियो मिण चौड़ी।

१—छीनना। २—फँफेड़े। ३—जल्दी। ४—देर से।
५—इनका जन्म मदरास (दक्षिण) से २६ मील की दूरी पर गाँव परम्बधुरम (जिला चंगलपट) में सं० १०७४ वि० में हुआ। इनके पूर्वज पहले क्षत्रिय थे बाद में ब्राह्मण होगये। इन्होंने भक्ति मार्ग और वैष्णव पन्थ का प्रचार किया। पद्म पुराण में जिन चार प्रसिद्ध सम्प्रदायों का नाम लिखा है; उस में पहली सम्प्रदाय (रामानुज) के यही जन्मदाता थे। इनका देहान्त स० ११९४ वि० में हुआ है। ६—जलाशय। ७—सड़ा हुआ। ८—फैलाव। ९—काई, जल-मैल, नील। १०—बूँद। ११—जैनियों के अन्तिम (२४वें) तीर्थङ्कर (महापुरुष) थे। जैन ग्रन्थों में इनको सात धनुष लम्बे लिखा है। इनका जन्म ईसा मसीह के छः सौ वर्ष पूर्व (B.C.) माना जाता है। ७२ वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हुई। १२—भगवान् महावीर तीर्थङ्कर के बड़े शिष्य। १३—जिस कुएँ में एक साथ बैलों की चार जोड़ियों से पानी खींचा जा सकता हो।

शेष भाग अगले अंक में.....

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद--पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता
(१ से १७ मार्च २०१५ तक)

१. श्री किशोर काबरा, अजमेर २. श्री रजनीश कपूर, दिल्ली ३. श्री अवनीश कपूर, दिल्ली ४. श्री अर्चित कपूर, दिल्ली ५. श्री विरदीचन्द गुप्ता, जयपुर, राज. ६. श्री प्रभुलाल कुमावत, किशनगढ़, राज. ७. श्री कमलेश कुमावत, किशनगढ़, राज. ८. श्री शशिभूषण मल्होत्रा, दिल्ली ९. श्री गणेश, जोधपुर, राज. १०. आर्यसमाज नरकटियालय, पश्चिमी चम्पारण ११. श्री मानवेन्द्रसिंह, जोधपुर, राज. १२. श्री चन्द्रसेन हरि सिंघानी, अहमदाबाद, गुज. १३. श्रीमती पुष्पलता, अजमेर १४. श्री ब्रह्ममुनि, अजमेर १५. श्री हेमन्त, अजमेर १६. श्री अनिल, अजमेर १७. श्री ऋषिपाल आर्य, नई दिल्ली १८. डॉ. धनलाल, नागपुर, महा. १९. श्री रामपत आर्य, महेन्द्रगढ़, हरि. २०. श्री दयानन्द देशवाल, झज्जर, हरि. २१. श्री तेजपाल सुपर्णा रावत, सोनीपत, हरि. २२. श्री यशपाल आर्य, नई दिल्ली २३. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर २४. श्री एम.आर. वाशी पुरशवानी, मलेशिया।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१ से १५ मार्च २०१५ तक)

१. श्री रामपाल आर्य, यमुनानगर, हरि. २. श्री विरदीचन्द गुप्ता, जयपुर, राज. ३. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. ४. श्रीमती चन्द्रकँवर, भीलवाड़ा, राज. ५. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर ६. श्री प्रभुलाल कुमावत, किशनगढ़, राज. ७. श्री पंकज पराशर, अजमेर ८. श्री दयानन्द वर्मा, गुलाबपुरा, राज. ९. श्री रामचन्द्र, अजमेर १०. श्री भँवरलाल जाट, जयपुर, राज. ११. श्री भगवान सहाय, अजमेर १२. आर्य मेडिकल, बीकानेर, राज. १३. श्रीमती प्रमिला मित्तल, अजमेर १४. श्रीमती टीना देवी, ब्यावर, राज. १५. श्री मयंक कुमार, अजमेर १६. श्री कैलाशचन्द्र शर्मा, अजमेर १७. श्री रामपत आर्य, महेन्द्रगढ़, हरि. १८. मास्टर कंवलसिंह, भिवानी, हरि. १९. श्री पहेलसिंह, सहारनपुर, उ.प्र. २०. श्री कल्याण राय शर्मा, अजमेर २१. श्रीमती उमा बाबूलाल सोनी, अजमेर २२. श्री राजेन्द्रसिंह, नागौर, राज. २३. श्री मुरलीधर भट्टड़, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नत कर सबको दुःख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अत्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

जिस यज्ञ से सब सुख होते हैं उसका अनुष्ठान सब मनुष्यों को क्यों न करना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६०

thearyasamaj.org

स्तुता मया वरदा वेदमाता-७

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्।।

मन्त्र कहता है परिवार में समन्वय का अभाव ही दु:ख का कारण है। परिवार विविधता की दृष्टि से अपूर्व इकाई है। इसमें पति-पत्नी समान युवा होने पर भी स्त्री-पुरुष के भेद से नितान्त भिन्न हैं। बच्चे और बूढ़े एक-दूसरे आयुवर्ग से नितान्त भिन्न होते हैं। माता-पिता और बालक सम्बन्ध से सबसे निकट होने पर भी योग्यता सामर्थ्य से शून्य और शिखर का अन्तर रखते हैं। इन सबको मिलाकर एक इकाई बनती है जिसे हम परिवार के रूप में जानते हैं।

अधिक समय तक एक साथ समय बिताने वाली इस इकाई में विविधता के कारण समस्याओं की अधिकता तथा विविधता होना स्वाभाविक है। परिवार में विविधता एक-दूसरे के पूरक हैं। पूरक होना एक-दूसरे को एक-दूसरे की आवश्यकता बताता है। परिवार के सदस्य एक-दूसरे को इसीलिए चाहते हैं क्योंकि उनका कार्य परस्पर सहयोग से चलता है। इस सहयोग को व्यवस्थित करने के उपाय को व्रत नाम दिया गया है। व्रत शब्द से सभी व्यक्ति परिचित होते हैं परन्तु रूढ़िगत अर्थ ही सबके काम में आता है। व्रत से हम समझते हैं ऐसी प्रतिज्ञा जिसके पालन करने का कोई मनुष्य संकल्प करता है। कोई किसी वस्तु के त्याग का संकल्प करता है, कोई किसी वस्तु के स्वीकार करने की इच्छा करता है। व्रत व्यापक शब्द है, इसका अर्थ है चयन करके स्वीकार करना।

ब्रह्मचारी को व्रती कहते हैं, उसने बहुत सारे संकल्प लिये होते हैं

जब बालक को यज्ञोपवीत धारण कराते हैं तो व्रत का मन्त्र बोलकर आहुति दिलवाते हैं। **अग्ने व्रतपते, चन्द्र व्रतपते, सूर्य व्रतपते, वायो व्रतपते और व्रतानां व्रतपते।** व्रतों का पालन करने वाले पदार्थों का उदाहरण दिया गया है। संसार में अग्नि व्रतपति है, सूर्य-चन्द्र-वायु सभी तो व्रतपति हैं, व्रतों के स्वामी हैं। यहाँ व्रतपति कहने से नियमों के स्वामित्व का बोध होता है। ये नियम विवशता नहीं हैं, स्वीकृत हैं इनका पालन करना इनका स्वभाव है। स्वभाव बन गये नियम खण्डित नहीं होते। परमेश्वर को इस प्रसंग में व्रतानां व्रतपते कहा है अर्थात् संसार में जितने भी व्रत हो सकते हैं उन सब व्रतों का वह स्वामी है। जितने नियम उसके अपने हैं उतने नियम तो किसी ने भी नहीं धारण कर रखे हैं। इसी कारण वह समस्त संसार को नियम में चलाने का सामर्थ्य रखता है। परमेश्वर नित्य है, इसलिए उसके नियम भी नित्य हैं, परमेश्वर सर्वत्र है, इस कारण उसके नियम ज्ञानपूर्ण हैं, उसके नियमों में कहीं त्रुटि नहीं होती। वह सर्वशक्तिमान् है अत: उसके नियमों में पालन कराने का सामर्थ्य भी है।

व्रत चलने के लिए अनिवार्य है- जिस मार्ग पर आप चलना चाहते हैं, चलने की इच्छा करते हैं, तब आप अपने विचारों का विश्लेषण करके निर्णय की ओर ले चलते हैं। तब पहली स्थिति बनती है और आपका विचार संकल्प का रूप लेता है। जब भली प्रकार विचार करके निश्चय करते हैं, तब यह संकल्पित विचार स्थायी बन जाता है। यह विचार के स्थायी करने की घोषणा का नाम व्रत हो जाता है।

संकल्प व्रत बन जाता है, वह अपने नियम पर, अपने मार्ग पर चल पड़ता है। यह व्रत है। यह व्रत उसे नियम पर चलने का अधिकार देता है, उसे दीक्षा कहा गया है। दीक्षित होने का अर्थ है, उस व्रत के साथ उसे सब पहचानते हैं। वह पहचान उसे चलने का, आवश्यक वस्तु को प्राप्त करने का अधिकार देता है। यह यात्रा जब प्रयोजन की पूर्णता तक जाती है तब उस पूर्णता को, सफलता को दक्षिणा कहा जाता है। यह सफलता का आधार है। व्रत अर्थात् व्रत पर चलकर ही सफलता की पूर्णता तक पहुँचा जा सकता है। व्रत की मनुष्य को पूरे जीवन में आवश्यकता रहती है। मनुष्य का जीवन निरर्थक नहीं है, सप्रयोजन है, यदि प्रयोजन जीवन में है तो उसको प्राप्त करने का उपाय भी होना चाहिए, इसलिए व्रत की आवश्यकता होती है।

जैसे बालक के, छात्र के जीवन में व्रत की आवश्यकता है, उसी प्रकार गृहस्थ के जीवन में भी व्रत की आवश्यकता होती है। इसी कारण विवाह संस्कार में वर-वधु एक दूसरे के हृदय पर हाथ रखकर व्रतों के पालन करने का संकल्प लेते हैं, इतना ही नहीं वे अपने व्रतों का पालन भी करते हैं, वे अपने साथी के व्रत से भी परिचित होते हैं तभी तो कहते हैं- मैं तुम्हारे व्रतों को अपने हृदय में धारण करता हूँ। व्रत को समझ लें तो जीवन को चलाना और समझना सरल हो जायेगा।

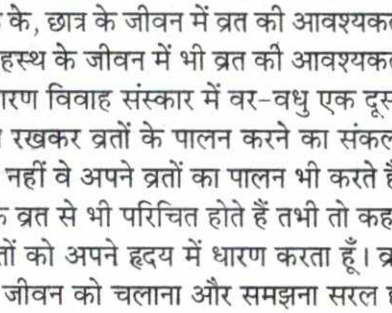

क्रमश: ....

thearyasamaj.org

संस्था - समाचार

०१ से १५ मार्च २०१५

परमपिता परमेश्वर की असीम कृपा से, सभा कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ से व आप सभी के सहयोग से सभा की सभी गतिविधियाँ, यथा-प्रातः सायं यज्ञ, प्रवचन, गुरुकुल संचालन, अतिथियों, आश्रमवासियों के लिए भोजन, गौशाला, चिकित्सालय, परोपकारी पत्रिका व अन्य ग्रन्थों का प्रकाशन, जनसम्पर्क प्रचार आदि पिछले दिनों भी यथावत् चलती रहीं।

प्रातःकालीन प्रवचन के क्रम में **स्वामी विष्वङ् जी** ने बताया कि संसार में व्यक्ति को सबसे अधिक दुःख तब होता है, जब कोई प्राप्त वस्तु व्यक्ति से छूटने लगती है। जब प्राप्त वस्तु छूटती या उसमें कोई ह्रास होता है, उसमें कोई कमी आती है, उसमें विकृति पैदा होती है तो व्यक्ति को दुःख होता है। प्रायः व्यक्ति इस दुःख को सहन नहीं कर पाता। योगदर्शन के भाष्यकार महर्षि वेदव्यास कहते हैं कि समस्त पदार्थों को दो भागों में बाँटा जा सकता है, जड़ और चेतन। इन दोनों प्रकार के पदार्थों से व्यक्ति का सम्पर्क/सम्बन्ध रहता है। जब इनकी बढ़ोत्तरी/वृद्धि होती है तो व्यक्ति को अच्छा लगता है और जब दोनों में अवनति होती है, ह्रास होता है तो व्यक्ति को दुःख होता है। वस्तुतः दुनिया में दुःख उसी को होता है जो नासमझ होता है। जिस किसी को, जिस किसी भी प्रकार का दुःख होता है तो समझ लेना चाहिए कि जिस किसी विषय में दुःख हो रहा है, उस विषय का बोध नहीं है। ईश्वर ने वेद में स्पष्ट रूप से समझाने का प्रयास किया है-

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

यह मन्त्र यजुर्वेद में दो बार आया है- एक १२/७९ में, दूसरा ३५/०४ में। दोनों स्थलों में पूरा का पूरा मन्त्र वही है। तो प्रश्न हो सकता है कि वेद में एक ही मन्त्र दो बार क्यों आया है। महर्षि दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में इन दोनों मन्त्रों का अलग-अलग अर्थ किया है, एक मन्त्र का आत्मा परक अर्थ किया है और दूसरे का परमात्मा परक।

अश्वत्थे= श्वः स्थास्यति न स्थास्यति वा तस्मिन्ननित्ये संसारे

अर्थात् जो कल रहेगा या नहीं रहेगा ऐसे अनित्य संसार में, संसार की वस्तुएँ कल रहेंगी या नहीं रहेंगी इसका हमें पता नहीं, ऐसी जगह-**पर्णे वो वसतिष्कृता**- पत्ते के तुल्य चञ्चल जीवन में हमारा निवास किया है, अर्थात् जैसे पत्ता विशेषकर पीपल का पत्ता (क्योंकि अश्वत्थ=पीपल) अपनी यौवन अवस्था में सुन्दर दृढ़ दिखाई देता है, पेड़ से मजबूती से चिपका हुआ प्रतीत होता है, लेकिन जब हवा तेज आए तो पता नहीं वह पत्ता कहाँ जाएगा? संसार के समस्त पदार्थ भी ऐसे ही हैं, आज हैं तो कल नहीं रहेंगे। यहाँ कल से अभिप्राय केवल कल नहीं है, इसका अभिप्राय परसों भी हो सकता है, एक सप्ताह बाद भी हो सकता है, एक महीने बाद, एक वर्ष बाद, कभी भी कुछ भी हो सकता है। जब व्यक्ति को यह अहसास नहीं होता तब उसे दुःख होता है । यह कपड़ा कल ऐसा नहीं रहेगा, कल का मतलब ३ महीने बाद, ६ महीने बाद, सालभर के बाद, २ साल के बाद ऐसा नहीं रहेगा, यह बात मुझे पता है, इसलिए जब कपड़ा ऐसा नहीं रहता तो मुझे दुःख नही होता, क्योंकि मुझे बोध है, ज्ञान है, लेकिन मकान के विषय में ज्ञान नहीं है। कल मकान टूट सकता है, गिर सकता है, भूकम्प आए या जमीन धँस जाए तो जमीन में समा सकता है। **अश्वत्थे वो निषदनम्**- संसार के समस्त पदार्थ कल रहेंगे या नहीं रहेंगे- किसी को पता नहीं है, क्योंकि ये उत्पन्न हुए हैं, उत्पन्न मात्र पदार्थ स्थिर नहीं रह सकता। जब व्यक्ति को यह बोध होता है तो उसे दुःख नहीं होता। यहाँ जब तक वस्तु है, उससे जुड़े रहना है, उसका पूरा लाभ लेना है, इस बात का निषेध नहीं किया जा रहा, बल्कि इसका विधान किया जा रहा है। कल रहेगा या नहीं- अतः उसका ठीक प्रयोग नहीं करना, वस्तु को नजरन्दाज करना, ठीक नहीं। उस वस्तु की भलीभाँति देखभाल करनी है, उससे लाभ लेना है लेकिन हाँ, यह बोध भी रखना है कि यह नश्वर है तो जब वह वस्तु नष्ट होगी तो दुःखी नहीं होंगे। इसी प्रकार शरीर के विषय में भी समझना चाहिए। **अश्वत्थे**= जो कल रहे या न रहे ऐसे शरीर में **वः**=तुम्हारा **निषदनम्**= निवास है अर्थात् ''शरीर कल रहेगा या नहीं रहेगा अथवा कल इस शरीर में कुछ भी हो सकता है, कोई भी रोग आ सकता है, खून की कमी हो सकती है, हृदय में समस्या आ सकती है, किडनी में समस्या आ सकती है। पेट, मस्तिष्क, कान, आँख, नाक, जिह्वा, हाथ-पैर आदि में कुछ भी हो सकता है, किसी भी प्रकार की कोई भी कमी आ सकती है'' जब सतत् मुझे यह बोध होगा तो कल कुछ हो जाये, तो मुझे

thearyasamaj.org

दु:ख नहीं होगा। इस बोध के लिये हमें अभ्यास करना होगा। कुछ विषयों में हम अभ्यास करते हैं वहाँ हमें दु:ख नहीं होता, जैसे कपड़ों के विषय में। आज मेरा जन्मदिन है, मुझे नए वस्त्र मिले हैं, मैं उन्हें धारण कर रहा हूँ, नए वस्त्रों को धारण कर प्रसन्न हूँ, लेकिन यह बोध मुझको है कि एक समय के बाद ये कपड़े पुराने हो जाएँगे, २ साल बाद फट जाएँगे, पुराने हो जाएँगे, कोई बात नहीं, दु:ख नहीं होता। जैसे कपड़े के विषय में जानते हैं वैसे ही इस शरीर के विषय में भी अभ्यास करना होगा और अभ्यास होने पर यदि शरीर में कोई समस्या आ जाए तो दु:ख नहीं होगा, सम स्थिति में रहता है, यही स्थितप्रज्ञ है। नहीं तो व्यक्ति दु:खी होगा, रोएगा, छाती पीटेगा। स्थितप्रज्ञ होने पर स्वयं के शरीर में कुछ भी होने पर दु:खी नहीं होता, तो उससे सम्बन्धित अन्यों (माता-पिता, भाई-बहन, चाचा, ताऊ) को कुछ भी हो गया तो कोई समस्या नहीं आएगी। उसका चिन्तन होगा कि ठीक है, यह तो होना ही था, ठीक है समस्या आई तो इसका समाधान करेंगे, जितने अंश में समस्या को सुलझा सकते हैं, उसे सुलझाना है, लेकिन रोना-धोना, परेशान होना, चिन्तित होना, मानसिक स्थिति को बिगाड़ के रखना और दु:ख में जीना-ये बुद्धिमत्ता का कार्य नहीं है। ये मूर्खता के कार्य, नासमझी के कार्य हैं, इसी बात को हमें समझना होगा।

आचार्य सोमदेव जी ने अपने प्रवचन क्रम में मनुस्मृति का स्वाध्याय कराया। मनु के श्लोकों की धर्म, सदाचार, संस्कृति, चरित्र-निर्माण आदि के अनेक दृष्टान्तों के माध्यम से सरल व्याख्या प्रस्तुत की। अपने दार्शनिक प्रसंग में आपने बताया कि सांसारिक मन:स्थिति और आध्यात्मिक मन:स्थिति में अन्तर होता है। जहाँ सांसारिक स्थिति में जो हम चाहते हैं, प्राय: वैसा होता नहीं है, और जो होता है वह प्राय: हमें भाता नहीं है (अच्छा नहीं लगता है) और यदि संसार में कुछ अच्छा भी लगने लगता है तो वह ज्यादा दिन टिक नहीं पाता- अर्थात् संसार में जो चाहते वह होता नहीं, जो होता है वह हमें भाता नहीं, और जो भाता है वह ठहरता नहीं है। इसके विपरीत आध्यात्मिक स्थिति में जो होने वाली स्थिति होती है, व्यक्ति उसी को चाहता है, जो नहीं हो सकती, उसकी इच्छा नहीं करता। होने वाली स्थिति को चाहता है तो वह प्राप्त होती है और वह स्थायी भी दिखती है, टिकने वाली दिखती है। महर्षि दयानन्द जी ने जब जन्म लिया तो टिकना चाहते थे, जीना चाहते थे लेकिन स्थिति ऐसी दिख रही थी, परिस्थिति ऐसी बन रही थी कि जीवन टिकता हुआ दिख नहीं रहा था, घटनाएँ ऐसी घट रही थीं जिनसे स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि भैया, जीवन ज्यादा दिन टिकने वाला नहीं है। शिव मन्दिर में गए, टिकाऊ ईश्वर चाहते थे लेकिन यह क्या? ईश्वर भी टिकाऊ नहीं मिल पा रहा। उधर मूर्तियों में चूहें क्या कूदे- ईश्वर भी हाथ से निकलने लगा। तो ऋषि-महर्षि क्या चाहते हैं? अथर्ववेद कहता है-

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु।।

– अथर्व. १९/४१/१

भद्रमिच्छन्त ऋषयः:- ऋषि लोग भद्र को चाहते हैं। भद्र के अतिरिक्त ऋषियों को कुछ भी नहीं चाहिए। मन्त्र में ऋषि का एक विशेषण कहा- **स्वर्विदः स्वः** सुख (को), **विदः** जानने वाला। यथार्थ में यदि कोई सुख को जानने वाला होता है, पहचानने वाला होता है तो वह ऋषि ही होता है, आध्यात्मिक व्यक्ति ही होता है, साधक ही होता है। सांसारिक व्यक्ति तो छिछले पानी में सुख ढूँढ़ने लगता है। निरुक्त में ज्ञान पिपासुओं को जलाशय/नदी में स्नान करने वाले के दृष्टान्त से समझाया है अर्थात् जलाशय में नहाने के लिए जाने वालों में कुछ घुटने तक पानी में जाकर ही सन्तुष्ट हो जाते हैं, कुछ छाती तक पानी में तृप्त हो जाते हैं, लेकिन अच्छे तैराक तो गहरे जल में गोते लगाकर ही सन्तुष्टि को पाते हैं। वैसे ही जहाँ सांसारिक व्यक्ति थोड़े से सुख से सन्तुष्ट हो जाता है, वहीं आध्यात्मिक थोड़े से सन्तुष्ट नहीं होता है। जब तक सुख की पुष्कल मात्रा न मिल जाए उसकी खोज जारी रहती है। तो यह भद्र प्राप्त कैसे होता है? मन्त्र कह रहा है- **तपो दीक्षाम्+उपनिषेदुः** अग्रे अर्थात् जब तपो= तप (और) दीक्षाम्= दीक्षा के, उपनिषेदुः= निकट जाते हैं अर्थात् सुख को जानने वाले ऋषि भद्र को चाहते हुए (उसे प्राप्त करने के लिए) तप और दीक्षा के निकट जाते हैं (तप और दीक्षा का आचरण करते हैं) महर्षि दयानन्द का दृष्टान्त हमारे सामने है, भद्र को प्राप्त करने के लिए ऋषि ने कितना तप किया, चाहे शारीरिक तप हो या वाचनिक तप हो या मानसिक तप हो, इन तीनों ही तपों में तपाकर महर्षि ने स्वयं को कुन्दन बनाया है। जब महर्षि के शारीरिक तप की बात करें तो सच्चे गुरु की खोज में अलकनन्दा के उद्गम की ओर बढ़ते हुए रास्ता बेरी की कटीली झाड़ियों से अवरुद्ध हो गया तो लेटकर वहाँ से आगे निकले और ऐसा करते हुए अपने मांस का बलिदान देना पड़ा। जब और आगे गए तो

thearyasamaj.org

शीत बढ़ती ही गई, नदी पार करते समय बर्फ के नुकीले किनारों से पैर लहुलुहान हो गए, लेकिन ऋषि भद्र के लिए आगे बढ़ते ही जा रहे हैं। इसी प्रकार महर्षि दीक्षित भी हुए। मन्त्र कह रहा है जब व्यक्ति तपस्वी और दीक्षित होता है, तब - **ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातम्** अर्थात् उस तपस्वी और दीक्षित से राष्ट्र उत्पन्न होता है, बल उत्पन्न होता है और ओज उत्पन्न होता है। बल और राष्ट्र तो विदित हैं, यह ओज क्या है? कई बार कहा जाता है कि इसके मुख में ओज है, इसकी वाणी में ओज है, इसके व्यक्तित्व में ओज है। शरीर में ओज है अर्थात् शरीर विशेष कान्ति से युक्त है, यह वैसी ही कान्ति होती है जैसी बसन्त की नई कोपलों (पत्तियों) में होती है, जैसे बच्चों के शरीर में होती है। यह चमक करती क्या है? यह व्यक्तियों को आकर्षित करती है। महर्षि दयानन्द के शरीर में ओज था, उनकी वाणी में ओज था। कहते हैं जब महर्षि मूर्तिपूजा खण्डन में अपनी ओजस्वी वाणी में व्याख्यान करते थे, लोग इतने प्रभावित होते थे कि टोकरियों में भर-भरकर अपने घरों की मूर्तियाँ निकाल फेंकते थे। तो तपस्वी और दीक्षित में बल उत्पन्न होता है। महर्षि दयानन्द में कितना शारीरिक बल था? महर्षि जोधपुर में ठहरे हुए थे, भ्रमण में जाते समय मार्ग में एक भारी रहंठ आया करती थी, एक पहलवान जो इस रहंठ को घुमाकर हौदी में पानी भरता था, उसे इस बात का अभिमान था कि मेरे अतिरिक्त इस रहंठ को कोई भी घुमा नहीं सकता। एक बार महर्षि भ्रमणार्थ जब वहाँ पहुँचे तो हौदी को खाली देख, पशुओं के पीने के पानी के लिए और शारीरिक व्यायाम की दृष्टि से रहंठ घुमाने लगे, थोड़ी ही देर में हौदी भर गई, लेकिन महर्षि का व्यायाम भी पूरा नहीं हुआ तो महर्षि टहलने आगे निकल गए। जब लौटे तो इतने में वहाँ पहलवान भी आ चुका था। उसने महर्षि से पूछा- महाराज क्या आपने ये हौदी भरी है? महर्षि ने कहा कि हाँ, हमने भरी है, हमने सोचा कि इससे हमारा व्यायाम हो जाएगा, लेकिन हौदी जल्दी ही भर गई, व्यायाम भी पूरा नहीं हो पाया तो हम टहलते आगे चले गए। पहलवान को बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि जिस हौदी को भरते-भरते मैं थक जाता हूँ, स्वामी जी का थकना तो दूर, ठीक से व्यायाम भी नहीं हुआ, कितना बल रहा होगा महर्षि के शरीर में! इसी प्रकार मानसिक बल भी, जितनी विषम परिस्थितियों में स्वयं को अडिग रखते हुए महर्षि ने कार्य किया, हम अनुमान कर सकते हैं कि कितना अधिक मानसिक बल रहा होगा और ऐसा होने पर अर्थात् जब भद्र की इच्छा करते हुए तपस्वी व दीक्षित होने पर ऋषि बल, राष्ट्र और ओज को उत्पन्न कर देते हैं तब- **तदस्मै देवा उपसंनमन्तु** अर्थात् उस ऋषि के लिए देवता भी प्रणाम करते हैं। विद्वान्/श्रेष्ठ उस तपस्वी का सम्मान करते हैं। इति।।

वैदिक साहित्य पर विशेष छूट

दानी महानुभावों के विशेष सहयोग से वैदिक पुस्तकालय, अजमेर द्वारा प्रकाशित रु. १६३५/- मूल्य की निम्नलिखित पुस्तकों का एक सैट ग्राहकों को आधे मूल्य (५० प्रतिशत) में अर्थात् रु. ८१७/- में दिया जा रहा है। पुस्तकों को डाक द्वारा मँगाने पर डाक व्यय के रु. १८३/- अतिरिक्त सहित कुल राशि रु. १०००/- में ग्राहकों को देय होगा।

पुस्तकों के सैट उपलब्धता रहने तक प्राथमिकता के आधार पर देय होंगे।

क्र. सं.	पुस्तक सं.	पुस्तक का नाम	मूल्य
१.	१२	ऋग्वेद भाषा भाष्य-१२ पुस्तक-१ सैट	६१०.००
२.	२	यजुर्वेद भाषा भाष्य-२ पुस्तक-१ सैट	४७५.००
३.	३	दयानन्द ग्रन्थमाला-३ पुस्तक- १ सैट	५५०.००
	१७	योग	१६३५.००

पुस्तकें मँगाने हेतु धनराशि-एम.ओ., डिमाण्ड ड्राफ्ट या ऑनलाईन द्वारा

खातेदार-वैदिक पुस्तकालय, अजमेर

बचत खाता संख्या- 0008000100067176,

बैंक- पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर

आई.एफ.एस.सी. संख्या PUNB 0000800 के माध्यम से भेज सकते हैं।

thearyasamaj.org

जिज्ञासा समाधान – ८४

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- मैं आपसे अपनी ही नहीं अपितु आम व्यक्तियों की जिज्ञासा हेतु कुछ जानना चाहता हूँ। कृपया समाधान कर कृतार्थ करें-

(क) तमाम कथावाचक, उपदेशक, साधु व सन्त नरक, स्वर्ग व मोक्ष की बातें करते हैं। आप इन को विस्तृत रूप से समझायें और अपने विचार दें।

(ख) धार्मिक पुस्तकों में लिखा मिलता है कि अमुक ऋषि ने सैंकड़ों नहीं हजारों वर्ष तक तप किया। इसमें क्या सत्यता है, सामान्यत: हर जीव-जन्तु की एक निश्चित/अधिकतम आयु होती है। इसका भी समाधान करें।

– डॉ. लक्ष्मणसिंह टाँक, पूर्व प्राचार्य, ५१, देवपुरम्, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

समाधन- (क) वेद विरुद्ध मत-सम्प्रदायों ने अनेक मिथ्या कल्पना कर, उन कल्पनाओं को जन सामान्य में फैलाकर पूरे समाज को अविद्या अन्धकार में फँसा रखा है, जिससे जगत् में दु:ख की ही वृद्धि हो रही है। ये मत-सम्प्रदाय ऊपर से अध्यात्म का आवरण अपने ऊपर डाले हुए मिलते हैं। यथार्थ में देखा जाये तो जो वेद के प्रतिकूल होगा वह अध्यात्म हो ही नहीं सकता। कहने को भले ही कहता रहे। महर्षि दयानन्द के काल में व उनसे पूर्व और आज वर्तमान में इन मत-सम्प्रदायों की संख्या देखी जाये तो हजारों से कम न होगी। उन हजारों में शैव, शाक्त, वैष्णव, वाममार्ग, बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम आदि प्रमुख हैं। महर्षि दयानन्द के समय से कुछ पूर्व स्वामी नारायण सम्प्रदाय, रामस्नेही सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, गुसाईं मत आदि और महर्षि के बाद राधास्वामी मत, ब्रह्माकुमारी मत, हंसा मत, सत्य सांई बाबा पंथ (दक्षिण वाले), आनन्द मार्ग, महेश योगी, माता अमृतानन्दमयी, डेरा सच्चा सौदा, आर्ट ऑफ लिविंग, निरंकारी, विहंगम योग, शिव बाबा आदि कितनों के नाम लिखें। ये सब अवैदिक मान्यता वाले हैं। इन्होंने अपने-अपने मत की पुस्तकें भी बना रखी हैं। इन पुस्तकों में इन मत वालों ने अपनी मनघड़न्त कल्पनाओं के आधार पर ही अधिक लिख रखा है। स्वर्ग, नरक, मोक्ष, आकाश में देवताओं का निवास स्थान, यमराज, यमदूत आदि की व्याख्याएँ अविद्यापरक ही हैं।

आपने स्वर्ग, नरक, मोक्ष के विषय में जो आज के तथाकथित उपदेशक, कथावाचक, साधु-सन्त कहते-बतलाते हैं, उसके सम्बन्ध में जानना चाहा है। यहाँ हम महर्षि की मान्यता को लिखते हैं व इन तथाकथित कथावाचकों की इन विषयों में क्या दृष्टि है उसको भी लिखते हैं। "स्वर्ग- जो विशेष सुख और सुख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है वह स्वर्ग कहाता है। नरक- जो विशेष दु:ख और दु:ख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है उसको नरक कहते हैं।" आर्योद्दे. १४-१५ स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में महर्षि इनके विषय में लिखते हैं- "स्वर्ग- नाम सुख विशेष भोग और उनकी सामग्री प्राप्ति का है। नरक- जो दु:ख विशेष भोग और उनकी सामग्री प्राप्ति को प्राप्त होना है।" सत्यार्थप्रकाश ९वें सम्मुल्लास में महर्षि लिखते हैं- "......सुख विशेष स्वर्ग और विषय तृष्णा में फँसकर दु:ख विशेष भोग करना नरक कहाता है। 'स्व:' सुख का नाम है, स्व सुखं गच्छति यस्मिन् स स्वर्ग:, अतो विपरीतो दु:खभोगो यस्मिन् स नरक इति। जो सांसारिक सुख है वह सामान्य स्वर्ग और जो परमेश्वर की प्राप्ति में आनन्द है, वही विशेष स्वर्ग कहाता है।"

महर्षि की इन परिभाषाओं के आधार पर (परमेश्वर की प्राप्ति रूप विशेष स्वर्ग को छोड़) स्वर्ग-नरक किसी लोक विशेष या स्थान विशेष पर न होकर, जहाँ भी मनुष्य आदि प्राणी हैं, वहाँ हो सकते हैं। जो इस संसार में सब प्रकार से सम्पन्न है अर्थात् शारीरिक स्वस्थता, मन की प्रसन्नता, बन्धु जन आदि का अनुकूल मिलना, अनुकूल साधनों का मिलना, धन सम्पत्ति पर्याप्त मिलना आदि है, जिसके पास ये सब हैं वह स्वर्ग में ही है। इसके विपरीत होना नरक है, नरक में रहना है। वह नरक भी इसी संसार में देखने को मिलता है।

नरक के विषय में किसी नीतिकार ने लिखा है

अत्यन्तकोप: कटुका च वाणी, दरिद्रता च स्वजनेषु वैरम्।
नीचप्रसङ्ग: कुलहीनसेवा चिह्नानि देहे नरकस्थितानाम्।।

अत्यन्त क्रोध, कटुवचन, दारिद्र्य, अपने स्वजनों से वैर-भाव, नीच-दुर्जनों का संग और कुलहीन की सेवा, ये चिह्न नरकवासियों की देह में होते हैं। ये सब चिह्न इसी संसार में देखने को मिलते हैं। इस आधार पर स्वर्ग अथवा नरक के लिए कोई लोक पृथक् से हो ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा। यह काल्पनिक ही सिद्ध हो रहा है।

जिस स्वर्ग लोक की कल्पना इन लोगों ने कर रखी

thearyasamaj.org
है, वह तो इस पृथिवी पर रहने वाले एक साधन सम्पन्न व्यक्ति से अधिक कुछ नहीं है।

मोक्ष निराकार परमेश्वर को प्राप्त कर, उसके आनन्द में रहने का नाम है अर्थात् जब जीव अपने अविद्यादि दोषों को सर्वथा नष्ट कर, शुद्ध ज्ञानी हो जाता है तब वह सब दु:खों से छूट कर परमेश्वर के आनन्द में मग्न रहता है, इसी को मोक्ष कहते हैं। वहाँ आत्मा अपने शरीर रहित अपने शुद्ध स्वरूप में रहता है। कथावाचकों के मोक्ष की कल्पना और उसके साधनों की कल्पना सब मिथ्या है। किन्हीं का मोक्ष गोकुल में, किसी का विष्णु लोक क्षीरसागर में, किसी का श्रीपुर में, किसी का कैलाश पर्वत में, किसी का मोक्षशिला शिवपुर में, तो किसी का चौथे अथवा सातवें आसमान आदि पर। इस प्रकार के मोक्ष के उपाय भी मिथ्या एवं काल्पनिक हैं। जैसे-

गङ्गागङ्गेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।।

- ब्रह्मपुराण. १७५.९२/पप.पु.उ. २३.२

अर्थात् जो सैकड़ों सहस्रों कोश दूर से भी गंगा-गंगा कहे, तो उसके पाप नष्ट होकर वह विष्णु-लोक अर्थात् वैकण्ठ को जाता है।

हरिर्हरति पापानि हरिरित्यक्षरद्वयम्।।

अर्थात् हरि इन दो अक्षरों का नामोच्चारण सब पापों को हर लेता है, वैसे ही राम, कृष्ण, शिव, भगवती आदि नामों का महात्म्य है।

इसी तरह

प्रातः काले शिवं दृष्ट्वा निशि पापं विनश्यति।
आजन्म कृतं मध्याह्ने सायाह्ने सप्तजन्मनाम्।।

अर्थात् जो मनुष्य प्रातः काल में शिव अर्थात् लिंग वा उसकी मूर्ति का दर्शन करे तो रात्रि में किया हुआ, मध्याह्न में दर्शन से जन्मभर का, सायङ्काल में दर्शन करने से सात जन्मों का पाप छूट जाता है।

इस प्रकार के उपाय पाप छूटाने मोक्ष दिलाने के मिथ्या ग्रन्थों में लिखे हैं और इन्हीं प्रकार के उपाय आज का तथाकथित कथावाचक बता रहा है। पाठक स्वयं देखें, समझें कि ये उपाय पाप छुड़ाने वाले हैं या अधिक-अधिक पाप कराने वाले। भोली जनता इन साधनों से ही अपना कल्याण समझती है, जिससे लोक में अविद्या अन्धकार, अन्धविश्वास, पाखण्ड और अधिक फैल रहा है।

वेद व ऋषियों द्वारा मुक्ति व उसके उपाय ऐसे नहीं हैं। वहाँ तो सब बुरे कामों और जन्म-मरण आदि दु:ख सागर से छूटकर सुखस्वरूप परमेश्वर को प्राप्त होकर सुख ही में रहना मुक्ति कहाती है। और ऐसी मुक्ति के उपाय महर्षि दयानन्द लिखते हैं "…..ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना, धर्म का आचरण और पुण्य का करना, सत्संग, विश्वास, तीर्थ सेवन (विद्याभ्यास, सुविचार, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान, सत्य का संग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियतादि उत्तम कर्मों का सेवन), सत्पुरुषों का संग और परोपकारादि सब अच्छे कामों का करना तथा सब दुष्ट कर्मों से अलग रहना, ये सब मुक्ति के साधन कहाते हैं।" इन मुक्ति के साधनों को देख पाठक स्वयं विचार करें कि यथार्थ में मुक्ति के साधन, उपाय ये महर्षि द्वारा कहे गये हैं वा उपरोक्त मिथ्या ग्रन्थों व तथाकथित कथावाचकों द्वारा कहे गये हैं वे हैं। निश्चित रूप से ऋषि प्रतिपादित ही मुक्ति के उपाय हो सकते हैं, दूसरे नहीं।

मिथ्या पुराणों जैसी ही मुक्ति ईसाइयों व मुसलमानों की भी है। ईसाइयों के यहाँ खुदा का बेटा जिसे चाहे बन्धन में डलवा दे। ईसाई जगत् में तो जीवितों को मुक्ति के पासपोर्ट मिल जाते हैं। समय से पूर्व अपना स्थान सुरक्षित कराया जाता है। जितना कुछ चाहिए उससे पूर्व उतना धन चर्च के पोप को पूर्व में जमा कराया जाता है।

मुसलमानों के यहाँ भी 'नजात' होती है और वहाँ पहुँच कर सब सांसारिक ऐश परस्ती के साधन विद्यमान हैं, मोहम्मद की सिफारिश के बिना उसकी प्राप्ति नहीं है अर्थात् उन पर ईमान लाये बिना। कबाब, शराब, हूरें, गितमा आदि सभी ऐय्याशी के साधन मिलते हैं। क्या यह भी कभी मुक्ति कहला सकती है? अर्थात् ऐय्याशी करना कभी मुक्ति हो सकती है? इस मुक्ति पर मुसलमानों का विश्वास भी है। वे कहते हैं-

अल्लाह के पतले में वहदत के सिवाय क्या है।
जो कुछ हमें लेना है ले लेंगे मोहम्मद से।।

इतना सब लिखने का तात्पर्य यही है कि जो वेद व ऋषि प्रतिपादित नरक, स्वर्ग व मोक्ष की परिभाषाएँ हैं, वही मान्य हैं इससे इतर नहीं। स्वर्ग व मोक्ष के उपाय भी वेद व ऋषियों द्वारा कहे गये ही उचित हैं। इन मिथ्या पुराणों व इनके कथावाचकों द्वारा कहे गये नहीं।

(ख) जिन पुस्तकों में मिथ्या गपोड़े लिखे हों वे धार्मिक पुस्तकें नहीं हो सकतीं, इसलिए जिन पुस्तकों में मनुष्य की आयु १०० वर्ष की वा अधिक से अधिक ३००-४०० वर्ष तक की हो सकने पर भी ये लिखा हो कि किसी ने हजारों वर्षों तप किया, वे पुस्तकें सत्य व धार्मिक

thearyasamaj.org

कैसे हो सकती हैं? हाँ अर्थवाद की दृष्टि से किसी ने तप की स्तुति के लिए बढ़ा-चढ़ा कर कहा, लिखा हो वह पृथक् बात है।

प्राय: पुराण आदि ग्रन्थों में इस प्रकार की बातें अधिक मिलती हैं। जैन सम्प्रदाय के ग्रन्थों व बाईबल, कुरान आदि में भी ऐसी मिथ्या बातों की भरमार है। जैसे शिव पुराण में ब्रह्मा व विष्णु का दिव्य सहस्र वर्ष पर्यन्त चलते रहने का वर्णन, गरुड़ पुराण में पर्वत के समान यमगणों के शरीरों का वर्णन आदि ये सब मिथ्या ही हैं। इसी प्रकार जैन ग्रन्थों की पोप लीला देखिये- जैन ग्रन्थ में लिखा है- एक स्पर्श इन्द्रिय जीव का देहमान एक सहस्र योजन अर्थात् पौराणिकों का योजन ४ कोश का परन्तु जैनियों का योजन १० हजार कोशों का होता है। ऐसे चार हजार कोश का शरीर होता है। और ऐसे जीव का आयुमान अधिक से अधिक दस हजार वर्ष का होता है। और भी- अब दो इन्द्रिय वाले जीव अर्थात् एक उनका शरीर और एक मुख जो शंख, कौड़ी और जूँ आदि होते हैं। उनका देहमान अधिक से अधिक अड़तालीस कोश का स्थूल शरीर होता है और उनका आयुमान अधिक से अधिक बारह वर्ष का होता है। अब इन मिथ्या बातों पर कौन विश्वास करेगा कि एक जूँ जैसे प्राणी का शरीर इतना बड़ा कि उसमें कई नगर समा जावें। ये सब कपोल कल्पित गपोड़े ही हैं, इसलिए जहाँ पर ऐसी मिथ्या बातें हो उन पुस्तकों को छोड़ देना ही अच्छा है और ऋषियों के ग्रन्थों को अपनाना कल्याण का काम है। अस्तु।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

आर्यजगत् के समाचार

१. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ के कुलाधिपति योगनिष्ठ पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती की सत्प्रेरणा से संचालित नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ, नुआपाली, जि. बरगड़ का तेरहवाँ वार्षिकोत्सव माघ शुक्ल चतुर्दशी एवं पूर्णिमा २०७१, तदनुसार दि. २-३ फरवरी २०१५ को गुरुकुल परिसर में यज्ञ, भजन व प्रवचन के साथ बड़े धूमधाम से मनाया गया। प्रात:कालीन यज्ञ के उपरान्त वेद एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के मर्मज्ञ पूज्यपाद स्वामी जी महाराज ने अपने आशीर्वचन में मनुष्य जीवन के उत्थान के लिए पुरुषार्थ को आत्म संबल के रूप में अपनाने पर बल दिया।

२. शिविर का आयोजन- आनन्दधाम, (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू के आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्यपाद महात्मा चैतन्यमुनि के सान्निध्य में दिनांक ११ से १९ अप्रैल २०१५ तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है, जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाएंगे तथा योगदर्शन-पठन-पाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित आचार्य श्री सन्दीप आर्य, प्रबुद्ध वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय आदि अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। डॉ. सुरेश योग द्वारा रोगोपचार भी करेंगे। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। सम्पर्क-०९४१९१०७७८८, ०९४१९१९८४५१

३. सम्मानित- आर्यजगत् के वरिष्ठ साहित्यकार एवं वैदिक प्रवक्ता आनन्दधाम, (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू-कश्मीर के मुख्य संरक्षक व निदेशक तथा अनेक आश्रमों, साहित्यिक संस्थाओं के संचालक व संरक्षक महात्मा चैतन्यमुनि जी को भुवनेश्वर, ओड़िशा में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्मान' से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित लोक सेवक मण्डल के राष्ट्रीय सचिव श्री दीपक मालब्य द्वारा दिया गया।

४. यज्ञों का आयोजन- वर्तमान में स्वाईन फ्लू ने उत्तर भारत के कई राज्यों में पैर पसार रखे हैं। राजस्थान में इस रोग से पीड़ित व मृतक सर्वाधिक हैं। जबकि चिकित्सा एवं औषधीय उपचार कारगर नहीं हो पा रहे, स्वाईन फ्लू निवारण-यज्ञ समिति (आर्यसमाज) जयपुर, राजस्थान के तत्त्वावधान में इसका प्रसार रोकने के लिए भेषज-यज्ञ श्रृंखला प्रारम्भ कर दी गई है। अग्नि में आहुत द्रव्य की शक्ति अनेक गुणा बढ़कर रोगाणुओं को नष्ट करने में समर्थ है, अत: इन यज्ञों के लिए सामग्री के घटक द्रव्य, राष्ट्रीय आयुर्वेद विभाग के विशेषज्ञों की अनुशंसा से मिलाए गए हैं। सार्थक परिणाम देख कर भारी जन सहयोग व संचालन हेतु आगामी अनुरोध भी प्राप्त हो रहे हैं।

५. शिविर का आयोजन- परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती उद्यान (गुरुकुल आश्रम) ग्राम-जमानी, इटारसी, जि. होशंगाबाद, म.प्र. में विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास के लिये चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर के मुख्य विषय- ध्यान-योग, यज्ञ, जूडो-कराटे, लाठी एवं संस्कृत श्लोक आदि अनेक विषयों का अभ्यास कराया जायेगा।

शिविर दिनांक ८ से १४ अप्रैल २०१५ तक
सम्पर्क- आचार्य सत्यप्रियार्य: -०७५०९७०६८२८

thearyasamaj.org

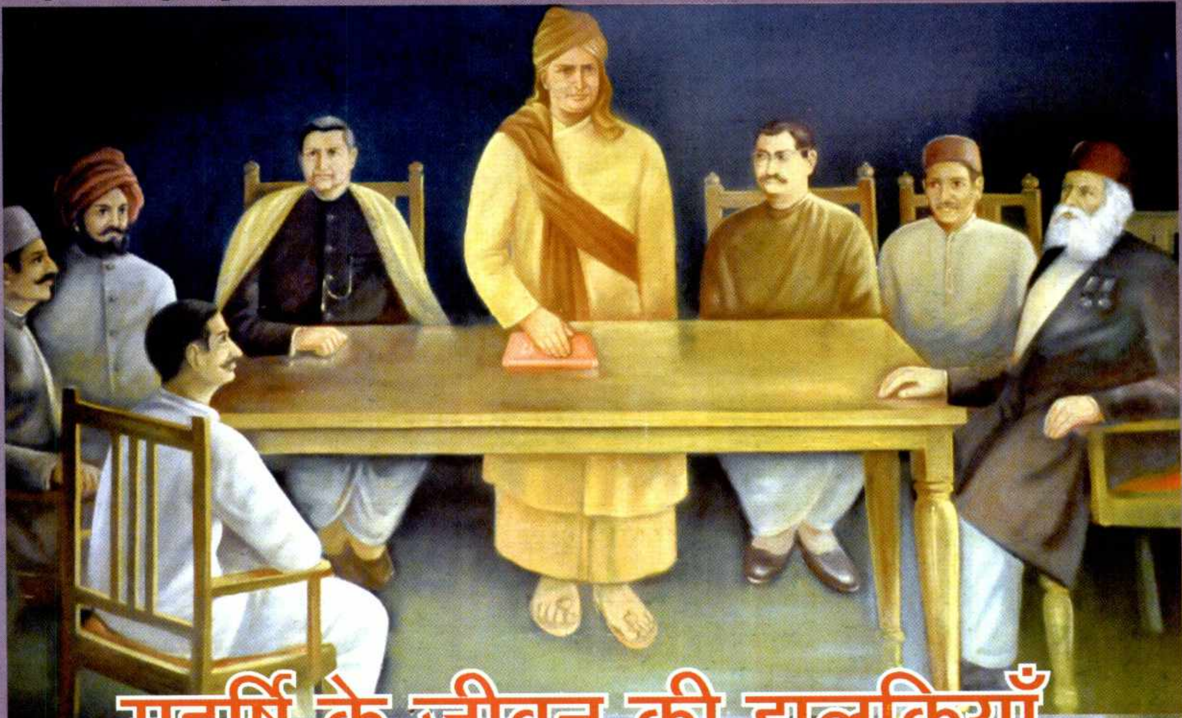

महर्षि के जीवन की झलकियाँ

thearyasamaj.org

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : ३० मार्च , २०१५ ३९५९/५९

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

(पुण्यतिथि 3 अप्रैल)

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१